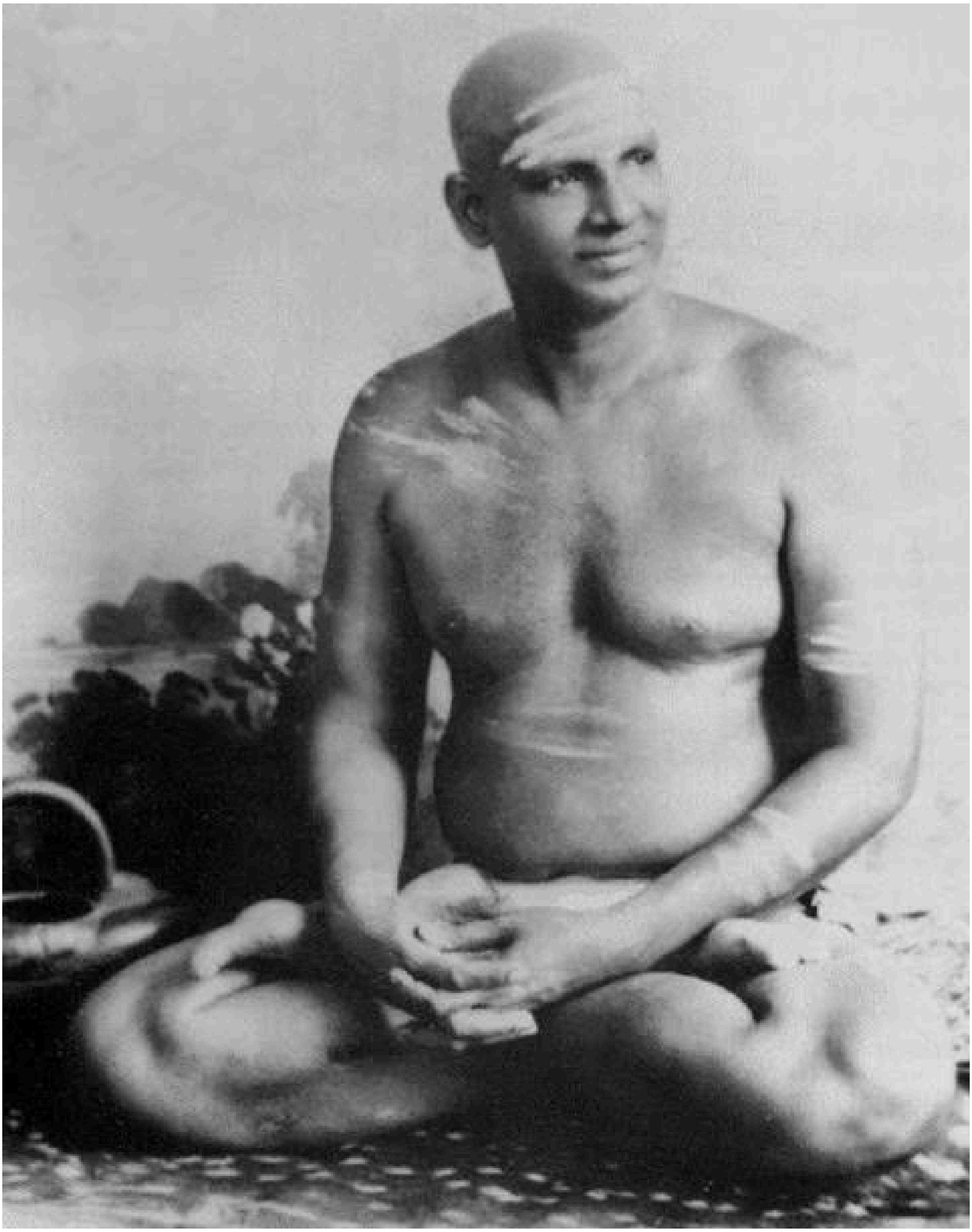
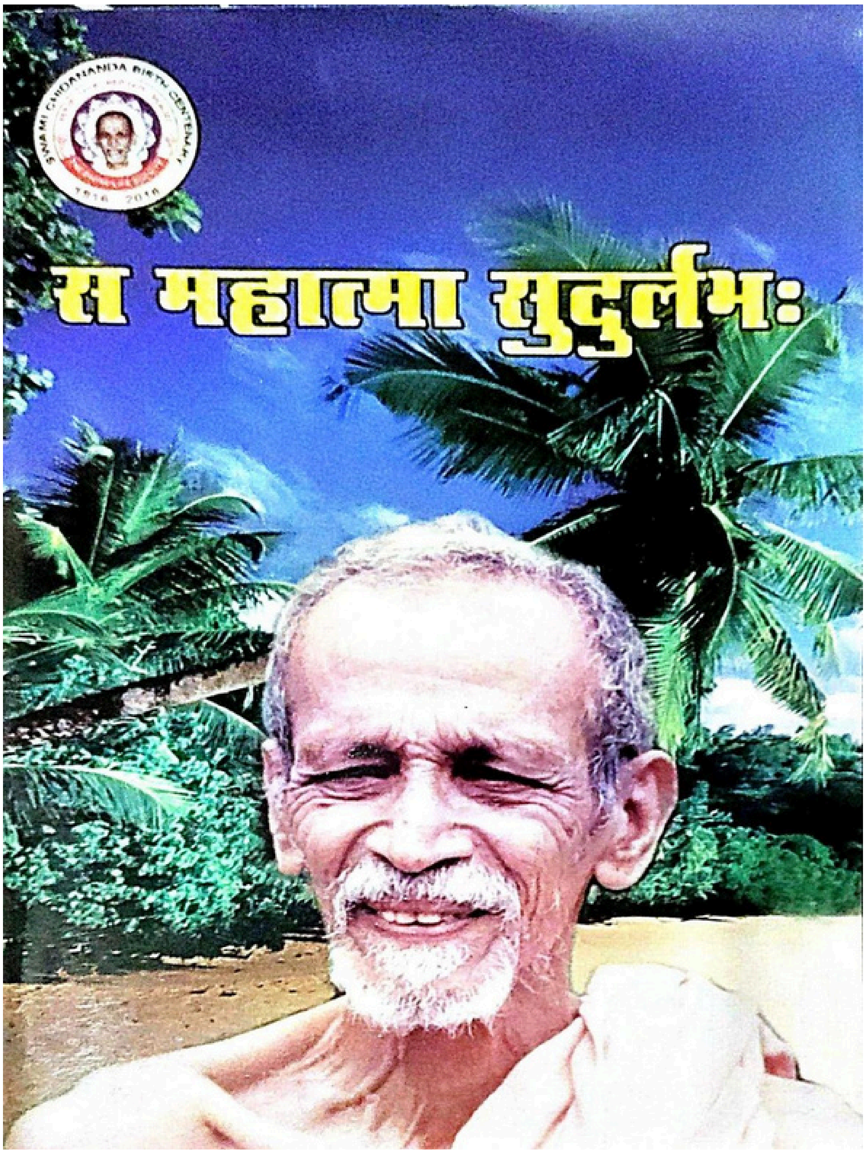



स महात्मा सुदुर्लभः

स महात्मा सुदुरुभलः

प्रकाशक

द डिवाइन र्ाइफ सोसायटी

पत्रार्य : शशवानन्दनगर- २४९१९२

जिर्ा:   टटहरी-गढ़वार्, उत्तराखण्ि (टहमार्य), भारत

www.sivanandaonline.org, www.dlshq.org

प्रथम संस्करण : २०१५

(२,००० प्रततयााँ)

Swami Chidananda Birth Centenary Series-43

तनःशुल्कववतरणाथ ल

'द डिवाइन र्ाइफ सोसायटी, शशवानन्दनगर' के शर्ए स्वामी पद्मनाभानन्द द्वारा प्रकाशशत तथा उन्हींके द्वारा 'योग-वेदान्त फारेस्ट एकोमी प्रेस, पो. शशवानन्दनगर- २४९१९२, जिर्ा टटहरी-गढ़वार्, उत्तराखण्ि' में मुटित ।

For online orders and Catalogue visit: disbooks.org

स महात्मा सुदुरु्भलः

यह पुजस्तका भगवत् ्स्वरूप सद्गुरुदेव श्री स्वामी चिदानन्द सरस्वती िी महारिा के िरण-कमर्ों में सेवक के श्रद्धा-सुमन, िन्मशत वावषकल अवसर पर सादर-सप्रेम समवपतल हैं।

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शशवानन्द िी महारिा की भाषा में सन्त-महात्मा वह हैं- जिनमें न अहंता होती है, न ही ममता। वह काम, क्रोध तथा र्भ से मुक्त होते ेहैं। सभी प्राणणयों को आत्मभाव से प्रेम करते ेहैं। वह वैराग्य तथा दया से सुसम्पन्न होते ेहैं। वह सवदला सत्य, टहत और मधुर भाषी होते ेहैं। दूसूरों की न शशकायत करते,े न तनन्दा करते ेहैं। वह सदा समदृजटट-समदशी होते ेहैं। वह सदा शान्त तथा प्रसन्न रहतेह।ैं वह तनभयल और उदार होते ेहैं। वह कभी मागाँते ेनहीं हैं। सदैव देते ेही रहते ेहैं। दया, प्रेम, दान और करुणा उनका स्वभाव होता है व बुराई के बदर्े ेसदा भर्ाई ही करते ेहैं और अपशब्द कहने वार्ों को भी आशीवादल देते ेहैं। सदैव दूसूरों का कल्याण करने को तत्पर रहते ेहैं। समग्र ववश्व में ऐसा सच्िा सन्त तो कोई ववरर्ा ही होता है। ऐसे सन्त-महात्मा की प्राजतत सुगम नहीं ंहोती।

िसै ेवसन्त ऋतु सुगजन्धत मन्द वायु से, नवीन कोमर् मृदु ुपत्र-पुटप से ववश्व को आनजन्दत तथा मन्त्रमुग्ध कर देता है, इसी प्रकार सन्त महापुरुष संसार रूपी सागर को स्वयं पार करके अपनी अहैतुकी कृपा से इस असार संसार रूपी सागर में िूबे हुए िनसाधारण को पार करा के सुख, शाजन्त तथा आनन्द प्रदान करते ेहैं।

एक बार गुरुदेव श्री स्वामी शशवानन्द िी महारिा स्वामी याज्ञवल्क्यानन्द िी से बोर्े थे- "आप उन्हें (स्वामी चिदानन्द को) सही मायनेमें नहींिनिते,े कदाचित् ्ही कोई उन्हें िानता है। वे ककसी की भी कल्पना से कहीं ंअचधक महान् ्हैं। आपकी बुद्चध उनकी महानता को ग्रहण नहींकर पायेगी, वे इतनेमहान् ्व्यजक्त हैं। म ैं उनकी शसद्धता को शसद्ध करनेके शर्ए यहााँआया हूाँ।"

यटद हम एक ऐसे अततमानवीय व्यजक्तत्व को देखते हैं िो पववत्रता से, धाशमकलता से, उदारता से, सज्िनता से, भर्ाई से, परोपकाररता से, उदात्त िररत्र से, ज्ञान से कुछ असाधारण हैं, तब हम कहते ेहैं, इस प्रकार का एक अतत मानवीय व्यजक्त यटद ववद्यमान है, तब भगवान् ्अवश्य है। नहींतो यह सब गुण कहा ाँसे आते ेहैं? िि हम साधारणतः नहीं ंदेखते ेककसी के अन्दर, िब हम ऐसा देवत्व, ऐसी पववत्रता, ऐसी धाशमकलता, ऐसी करुणा देखते हैं तब हम अनुभव करते हैं कक हााँ, मनैं भगवान् ्को नहींदेखा, परन्तु भगवत्व को मनैं देखा है।

ऐसेही सन्त परम पावन स्वामी चिदानन्द िी महारिा को बोध करने हेतु और एक स्वामी शशवानन्द या चिदानन्द िैसा सन्त होना पडेगा। गुरु महारिा स्वामी चिदानन्द िी महारिा के बारे में कुछ शर्खना सेवक के शर्ए असम्भव है, परन्तु उनकी कृपा से उनकी सेवा में रह कर िो कुछ देखनेका सौभाग्य प्रातत हुआ है, उसमें से कुछ यहा ाँप्रस्तुत करता हूाँ, ताकक हम सब अपने िीवन में कुछ सीख कर ग्रहण कर सकें। हमारा मानना है कक

स महात्मा सुदुरुभल: 4 स्वामी िी महारिा का िीवन ही िीतेिागते वेदोन्त-दशनल का उदाहरण है। स्वामी िी महारिा ने गीता,
उपतनषद् आटद शास्त्रों का शसफल उपदेश नहींटदया है, परन्तु अपनिीवन में सब पािन करके, आिरण में उतार कर टदखाया है। हम सब धन्य हैं कक हम सब उनके साजन्नध्य में आये हैं। (गुरु महारिा, स्वामी िी महारिा और स्वामी िी आटद शब्दों को स्वामी चिदानन्द िी महारिा समझना िाटहए।)

ॐ

सन् ्१९९४ टदसम्बर माह रात प्राय: ८:३० का समय होगा। गुरु महारिा की गाडी भुवनेश्वर के खण्डगिरर जस्थत शशवानन्द शत वावषकल बार्क उच्ि माध्यशमक ववद्यार्य के गुरु कुटीर में आ कर रुकी। गेट से गुरु कुटीर करीब ६-७ मीटर होगा। उस पथ की िौडाई ८-९ फीट होगी। पथ के दोनों तरफ गेंदे के पौधे र्गेहुए थे। गेंदे के बाद हिशर्या, गुर्ाब आटद पौधे र्गे हुए थे। गुरु कुटीर के बरामदे में एक र्ाइट िर् रही थी िो कक पथ को सामान्य रूप से आर्ोककत (उिार्ा) कर रही थी। गुरु महारिा िी गाडी से नीिे उतरे और वहााँ उपजस्थत और सेवक ने प्रणाम ककया, परन्तु गुरु महारिा िी सबको ॐ नमो नारायणाय कहते हुए वहींपथ में ही नीिे बैठ गये। िैसे गुरु महारिा िी का ध्यान कहीं और हो। पहर्े तो ककसी की समझ में नहींआया कक क्या हुआ है? गुरु महारिा एक गेंदे के पौधेको एकटक देखने र्गे, तभी सबका ध्यान उस गेंदे के पौधे की तरफ गया तो पता िर्ा कक पौधे की एक छोटी-सी टहनी ककसी प्रकार टूट कर नीिे की तरफ र्टक गयी है। टिा र्राईट से थोडा उिार्ा हुआ। सेवक गैस र्ाइट भी र्े कर आया। उिार्े में गुरु महारिा अच्छे से देखनेके बाद बोर्े- "गत्ता और धागा र्े कर आओ।" गुरु महारिा िी के तनिी सेवक बोर्े- "स्वामी िी, हम र्ोग गेंदे के पौधेको ठीक से बाधाँ देंगे, आप िर् कर फ्रैश हो िाय।ें" कारण गुरु महारिा िी करीब १२० ककमी की दूरी से कार से सफर करके आये थे। परन्तु गुरु महारिा िुप रहते हुए ध्यान से अपना काम करते रहे। सेवक धागा और गत्ता र्े कर आया। िैसे ककसी के हाथ-पैर टूटने पर उसके तर्ास्टर ककया िाता है ठीक वैसे ही गुरु महारिा िी ने गेंदे के पौधेकी टहनी पर गत्ते द्वारा बडी ही सफाई से पट्टी की। सेवक को पकडने को कहा और खुद धागा बाधाँ। बाधाँनेके बाद िब खुद को तसल्र्ी हुई तब उठ कर अपनेकमरे में गये। यह काम करने में गुरु महारिा िी को शायद २०-२५ शमनट का समय र्गा। सही मायने में यह बात न कही िा सकती है, न शर्खी िा सकती है; क्योंकक गुरु महारिा िी ने जिस भाव से, जिस श्रद्धा से, जिस तन्मयता से, जिस एकाग्रता से यह काय लककया, उसको भाषा देने में सेवक असमथ लहै। कैसी अद्ववतीय दृजटट है गुरु महारिा की! िैसे पेड-पौधों की पीडा को खुद अनुभव करते हैं या उनकी भाषा को समझते हैं। नरसी मेहता की भाषा में- 'वैटणव िन तो तेने कटहए, िो पीर पराई िानेरे।' गीता की भाषा में कहें तो-

यो म ांपश्यति सर्त्रव सर्ं च मतय पश्यति।
स्यि हां न प्रणश्य मम सच मे न प्रणश्यति ।। (गीी : ६-३०)

िो पुरुष मुझे सवत्रल देखता है और सवस्लव मुझमें देखता है, वह कभी मुझसे दूर नहीं होता और न ही म ैं उसके शर्ए कभी अदृश्य होता हूाँ।

ॐ

सन् ्२००४ अक्तूबर माह में स्वामी िी महारि देहरादून, शाजन्त तनवास के गेट से र्ान तक और र्ान से गेट तक टहर् रहे थे। समय सायं५ बिेके आस-पास का होगा। दो सेवक स्वामी िी महारि के दोनों तरफ थे ेऔर बाकी स्वामी िी महारि के पीछे-पीछे िर् रहे थे। दो सेवक धोती की तह र्गा कर स्वामी िी महारि के िारों तरफ मक्खी-मच्छर भगा रहे थे। इसी बिी एक मच्छर स्वामी िी महारि के िरणों के पीछे-पीछे िा रहा था। उस मच्छर को कई बार भगाने की कोशशश की गयी; परन्तु वो गया ही नहीं, िैसेवह मच्छर स्वामी िी महारि का अनुसरण कर रहा हो। सबकी तनगाहें उसी मच्छर पर थीं। स्वामी िी महारि गेट से र्ान और र्ान से गेट, कफर गेटे से र्ान और र्ान से गेट-साथ-साथ मच्छर भी पीछा कर रहा था। स्वामी िी महारि को इस ववषय में अवगत कराया गया। तब स्वामी िी महारि बोर्-े "उसका इस शरीर (अपनी ओर इशारा करते ेहुए) के साथ पूविलन्म का कुछ ऋणानुबन्ध होगा, इसीशर्ए वह पीछे-पीछे घूम रहा है। ऋणानुबन्धन िब पूरा हो िायेगा, तब वह मुक्त हो िायेगा।" स्वामी िी महारि इस बात को बोर्ने के शर्ए जितने समय खडे ेरहे, उतने ही समय में वह मच्छर स्वामी िी महारि को स्पश लकरके कहें या कफर काट कर िर्ा गया। स्वामी िी महारि िर्ने र्गे। इस बार िब स्वामी िी महारि गेट से र्ान की ओर आये तो मच्छर नहींथा। शायद स्वामी िी महारि की बात का गूढ़ रहस्य यही है कक एक मच्छर स्वामी िी महारि का अनुसरण करके मुक्त हो सकता है तो हम सब अगर गुरुदेव, गुरु महारि िी के बताये हुए पथ का अनुसरण करें तब तनजश्ित ही मुजक्त पा सकेंगे े!

ॐ

सन् ्१९९५ में गुरु महारि के शशवानन्द शतवावषकल बार्क उच्ि माध्यशमक ववद्यार्य की गुरु कुटीर में आवास कार् के समय, एक टदन सायं सेपहर्े ेकफल्टर कॉफी (मिास कॉफी) पीने वार्े थे। अभी शुरू नहीं ंकी थी, उसी समय एक कुत्ते के खासँने की आवाि सुनायी पडी। कुत्ते का खासँना बहुत र्म्बा था, िैसे ेकक वह रो रहा हो। गुरु महारि िी ने अपने कमरे सेॐ ॐ कर आवाि दी तो प्रशान्त शमश्रा िी (अब स्वगीय), स्वामी िी के कमरे में गये, तब गुरु महारि िी बोर्े-े"कुटीर के पीछे की ओर कुत्ता खासँ रहा है, उसके शर्ए ४-५ पीस ब्रेि र्े कर िाओ, एक-एक ब्रेि उसे ेखाने ेको दो।" शमश्रा िी और सेवक ब्रेि र्े कर पीछे की ओर गये, परन्तु वहाँकोई कुत्ता नहीं ं शमर्ा। गुरु कुटीर के िारों तरफ ढूढ़ँा, कुत्ता नहींशमर्ा। हॉस्टर् और स्कूर् की तरफ भी देखा, परन्तु कहीं ंभी कुत्ता नहींशमर्ा। वापस गुरु कुटीर आये तब तक गुरु महारि िी ने कॉफी सेवन कर र्ी थी। गुरु महारि िी को बताया गया कक हमनेपूरा कैम्पस देख शर्या, परन्तु कुत्ता नहींशमर्ा।

कुछ समय के बाद गुरु महारि िी छत के ऊपर टहर्ने के शर्ए तनकर्े। छत के ऊपर िाने के शर्ए सीढ़ी ढ़िनेर्गेथे, तब एक बार कफर कुत्ते की आवाि सुनायी पडी, तब तक थोडा अधेँरा हो गया था। आि िैसी गुरु कुटीर के िारों तरफ दीवार है, उस समय नहींथी। उस समय बासँ में हल्का घेरा (बाड) बनाया गया था। गुरु महारि िी पीछे के घेरे के पास गये, गैस र्ाइट और टािलर्ाइट से कुत्ते को ढूढ़ँना शुरू ककया, ब्रेि भी र्ायी गयी। उस समय वह कुत्ता अपने आप उसी स्थान में आया िहाँगुरु महारि िी बासँ को पकड कर खडे ेथे। िैसे ेवह

कुत्ता गुरु महारि ि◌ी को पहिानता हो और उनके हाथ से ही (ब्रि रूपी) प्रसाद ग्रहण करना ि◌ाहता था। इसशर्ए बि गुरु महारि ि◌ी खुदु नहीं ◌ंआये तब वह टदखायी नहीं टदया और अब अपने आप गुरु महारि के पास आया। तब गुरु महारि ि◌ी ने झुकु कर एक-एक ब्रि पीस उसे ◌ेअपनेहाथ से णखर्ाया और वे उसके माथे ◌ेपर बडेतयार से अपना एक हाथ कफरा रहे थे। उस कुते्ते के शरीर में ज्यादातर बार् नहींथे ◌ेऔर वह बहुुत रुग्ण (बीमार) भी था, देखने ◌ेमें बहुुत अिीब र्ग रहा था। शायद हम र्ोग उसेछूना भी पसन्द नहींकरते। उसी रात गुरु महारि ि◌ी ने ककसी को शमर्ने के शर्ए समय दे रखा था, परन्तु उनको कोई ि◌ल्दी नहींथी। कुछ समय के बाद गुरु महारि ि◌ी सीधेखडे ◌ेहुुए और कुत्ता भी वहााँसे धीरे-धीरे ि◌र् गया। गुरु महारि ि◌ी छत के ऊपर टहर्ने के शर्ए गये, र्ेककन कुते्ते की वह आत लिाह और गुरु महारि की वह करुणापूण लिाह वणनल से परे है। वह कुत्ता भी बहुुत नसीब वार् है। बाद में कभी वह कुत्ता टदखायी नहींटदया। 'शुतन ि◌ैव श्वपाके ि◌ पंडिताः समदशशनलः' (गीता : ५-१८)।

ॐ

साधारणतः व्यजक्त के व्यवहार से ही पता ि◌र्ता है कक वह कैसा इनसान है। हर कोई अपने से महत्त्वपूण ल व्यजक्त, वयोज्येटठ, ककसी उच्ि पद पर आसीन व्यजक्त, ककसी सम्मानस्पद व्यजक्त को ही तयार, सम्मान और आदर करता है। अपनेसेहर प्रकार से कम ओहदे वार्े को र्ोग तयार, सम्मान और आदर देनेमें ि◌ूक ि◌ाते ◌ेहैं। कोई बबरर्ा ही सबका आदर कर पाता है। गुरुदेव स्वामी शशवानन्द ि◌ी महारि ने अपनी ववश्व-प्राथनला में टदया है-हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दशनल करें। तुम्हारी अिनला के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें। स्वामी ि◌ी महारि ने ि◌ो दूसूरों को उपदेश टदया, वह अपनिीवन में आिरण करके टदखाया।

शाजन्त तनवास, देहरादूनू में स्वामी ि◌ी महारि का मुण्िन करने के शर्ए कयूम नाम का एक मुसर्मान नाई आता था। ि◌ो र्ोग शाजन्त तनवास गये हैं, उन्होंनेदेखा होगा, ि◌हा ◌ाँगुरु महारि की व्हीर् ि◌ेयर रखी हुुई है, उस ि◌गह की ि◌ौडाई कम है और र्म्बाई ज्यादा है। उसी ि◌गह पर निी बैठै कर गुरु महारि मुण्िन करवाते ◌ेथे। मुण्िन की सारी सामग्री पहर्ेसेतैयार रहती थी। ठण्ढी के टदन हैं तो रूम हीटर र्गा कर उस ि◌गह को पहर्े ◌ेसे ही गम लरखा ि◌ाता था। नाई पहर्े ◌ेसे ि◌ाय-नाश्ता करके इन्तिार करता था। गुरु महारि अपने कमरे से तनकर्ते ◌ेही बोर्ते ◌ेथे–े "अल्र्ा हुु अकबर = बबसशमल्र्ा टहर रहमातनरलहीम अर्हम्दु ◌ुशर्ल्र्ाही रजब्बर् आर्मीन।"

तब तक गुरु महारि मुण्िन के स्थान पर पहुुाँि ि◌ाते ◌ेथे। तब नाई को हाथ ि◌ोड कर थोडा झुक कर 'अस्सर्ामु अर्ैकुम' बोर्तेथे।◌े नाई भी हाथ ि◌ोड कर 'वार्ेकुम अस्सर्ाम' बोर्ता था।
गुरु महारि अपने आसन पर बैठ ि◌ाने के बाद नाई को अपने सामनेबुर्ाते थे। नाई के सामनेआ ि◌ाने पर गुरु महारि नाई के ि◌रणों में शसर र्गा कर प्रणाम करते ◌ेथे। कफर नाई को एक हाथ दीवार में सहारा दे कर अपना एक पैर ि◌मीन से थोडा-सा ऊपर करने को कहते ◌ेथे। नाई ि◌ैसे ◌ेही एक पैर ऊपर करता, तब गुरु महारि ि◌ी उसके पैरै के तर्वे में अपना हाथ कफरा कर ि◌रण धूर् अपनी आखोंाँ में और शसर में र्गाते ◌ेथे। कफर दूसूरा पैर ऊपर उठाने को

बोर्ते ेथे। वैसेही दूसूरे पैर के तर्वे में हाथ कफरा कर आखाँ और शसर पर गाते ेथे। दो शर्फाफे और दो प्रसाद के पैकेट नाई को देते ेथे, जिनको पहरे् ेसे तैयार करके रखा िाता था। एक शर्फाफे में 'पाररश्रशमक' और नाई का नाम 'कयूम िी' शर्खा होता था, दूसूरे शर्फाफे में 'ईनामी'- 'बक्शीश' और 'कयूम िी' शर्खा होता था जिसको स्वामी िी महारिा खुदु टहन्दी में शर्खतेथे। दोनों शर्फाफों में अर्ग-अर्ग अवसरों पर अवसरानुकूर् धनराशश होती थी। कभी होर्ी, कभी ईद, कभी दीवार्ी, कभी मुहरलम, कभी रमिान पर ज्यादा रकम होती थी। प्रसाद के पैकेट में एक कयूम के बच्चों के शर्ए होता था, जिसमें कई ककस्म की िाकरे्ट और बबस्कुट होते ेथे। दूसूरे पैकेट में िो सबको देते ेहैंवही सोनपापडी, दो नमकीन के पैकेट, दो बबस्कुट पैकैट होते ेथे। यह सब हो िानेके बाद स्वामी िी महारिा आखाँ मूदूँ कर सीधा हो कर बैठ िाते ेथेिैसे ेध्यान में बैठे हों। मुण्िन का एक कपडा स्वामी िी को ओढ़ा टदया िाता, तब मुण्िन-प्रकक्रया शुरू की िाती थी। कयूम बहुत तयार से, ध्यान से स्वामी िी महारिा का मुण्िन करता था। मुण्िन के अन्त में पास में िो सेवक होते ेथे, वह देख रे्तेथेकक कहीं ंछूट तो नहींगया। मुण्िन हो िाने के बाद स्वामी िी महारिा पहरे् ेकी भातााँत नाई को प्रणाम करते ेथे। धन्यवाद देना तो कभी भी नहींभूर्ते थे। स्वामी िी महारिा बोर्ते थे- "आप हिामत करके सबको सुन्दर बनाते ेहो, र्गता है िैसेउमर कम हो गयी हो।" कभी-कभी पूछते थे- "आप रोिा नमािा पढ़ते ेहो ? िुम्मेके टदन मजस्िद िा कर नमािा अदा करना। अगर नहीं ं िा सके तो िहा ाँहो, वहींनमािा अवश्य पढ़ना।" एक बार तो नमािा के समय आवश्यक आसन और टोपी खरीद कर नाई को भेंट दीं। नाई को धन्यवाद बोर् कर स्वामी िी अपनेकमरे में िारे् िाते ेथे। यह तो बाह्य दृजटट है, परन्तु स्वामी िी महारिा के भाव तो अवणनलीय हैं। 'अमातनना मानदेन' स्वयं अहंभाव से शून्य होना, और दूसूरों को मान देना तो कोई आपसे सीखे।

तृणादपप सुनीचेन तरोरपप सहहष्णुना ।
अमातनना मानदेन कीतनलीयः सदा हररः ।।

घास के समान ववनीत, वृक्षों से भी अचधक सहनशीर्, अहंभाव से शून्य, दूसूरों के प्रतत आदर-सम्मान का भाव रखते ेहुए सदा हरर की मटहमा का गान करना िाटहए।

ॐ

भगवान् ्बद्रीनाथ िी के पुिारी िी को रावर् िी कहते ेहैं। एक बार मुख्य रावर् िी अपने कुछ सहायक साचथयों के साथ स्वामी िी की अनुमतत रे्कर दशनल के शर्ए शाजन्त तनवास आये थे। स्वामी िी महारिा ने पहरे् े से सबको बोर्ा था कक रावर् िी कहा ाँपर और कौन-सी कुसी में बैठेंगे ेऔर बाकी र्ोग कहा ाँबैठेंगे। रावर् िी की कुसी में सफेद कपडा िार्ने को कहा था। सबको कफल्टर कॉफी देनेको कहा था। प्रसाद में अनेक प्रकार के मेवे और फर्, रावर् िी के शर्ए फर्ों की टोकरी, फूर्मार्ा आटद सब-कुछ पहरे् ेसे बोर् रखा था। शाजन्त तनवास हॉर् में स्वामी िी महारिा की कुसी के दाटहनी ओर रावर् िी के शर्ए कुसी में सफेद कपडा िार् कर रखा गया। ठीक समय में रावर् िी अपने सहयोगी साचथयों के साथ शाजन्त तनवास में पहुाँिे, शायद वह १७ र्ोग थे। सेवक ने

स महात्मा सुदुरुभल: 8 सबके शए मिस कॉफी कफल्टर मशीन में िार् कर िूल्हे पर रखी, साथ-साथ सबको देनेके शए प्रसाद के पैकेट
भी तैयार कर रहा था। परन्तु कॉफी और प्रसाद पैकैट तैयार होनेसे पहरे् ेगुरु महारिा िी अपनेकमरे से िय बिीववशार् कहते ेहुए हॉर् में आ गये।

हॉर् में आनेके बाद गुरु महारिा ने पहनेहुए अपनेशार् और टोपी तनकार् टदये। रावर् िी को िय बिीववशार् कह कर तीन बार साटटांग प्रणाम ककया, रावर् िी ने भी स्वामी िी महारिा को साटटांग प्रणाम ककया। गुरु महारिा िी ने गुर्ाब फूर् की एक बडी मार्ा रावर् िी को पहनायी, एक शार् ओढ़ाया और प्रणामी शर्फाफा भेंट ककया। स्वामी िी महारिा अपनी कुसी पर बैठ गये तब रावर् िी ने बिीनाथ िी का प्रसादी उत्तरीय, स्वामी िी को ओढ़ाया और िन्दन, तुर्सी, प्रसाद आटद स्वामी िी को भेंट टदया। गुरु महारिा ने सारे प्रसाद को अपनेशसर में र्गा कर प्रणाम ककया और एक थार्ी में रखा। हम सबसे बोर्े कक आप सब प्रणामी शर्फाफा दे कर प्रणाम करें। स्वामी िी ने हम सबको शर्फाफे में रुपये रख कर पहर्े ेसे टदये थे। बब्रगेडियर सब्बरवार् िी आटद सबने पहर्े ेएक-एक करके रावर् िी को साटटांग प्रणाम करके प्रणामी शर्फाफा भेंट ककया। आणखर में सेवक ने रावर् िी को साटटांगं प्रणाम ककया और ठीक प्रणामी शर्फाफा देते ेसमय एक सेवक ने इस सेवक का नाम र्े कर कहा- "सारी कॉफी िूल्हे में चगर गयी।" सेवक ने गैस को कम कर रखा था। कफर भी कॉफी निी चगर गयी। यह बात सुन कर सेवक का ध्यान हट गया। उस समय यू ाँहुआ कक सेवक ने दाटहनेहाथ में शर्फाफा पकडा था, बाया ाँ हाथ दूरू था, और रावर् िी को नहींदेख कर ककिन की ओर देख रहा था। सेवक उस समय स्वामी िी महारिा से करीब १ फुट की दूरूी पर था। स्वामी िी महारिा सेवक का ऐसा आिरण देख रहे थे। उसी समय स्वामी िी महारिा िोर सेबोर् उठे- "ये.... ये... क्या?" इतनी तिे आवािा सुन कर सेवक िौंक गया और हाथ से शर्फाफा निी चगर गया। शीघ्रता से निी सेशर्फाफा उठा शर्या। स्वामी िी बोर्े- "ये क्या, ऐसा कोई ककसी सम्मानस्पद, पूज्य व्यजक्त को देता है क्या? िैसे ेपोस्ट मैन चिट्ठी देता है! तुमने खुद देखा नहींककसको देते ेहो। जिनको देते े हो, उन्होंनेभी देखा नहीं, और उनके हाथ में भी टदया नहीं। दोनों हाथों में शर्फाफा पकड कर प्रेम से उनके हाथ में देना िाटहए। कफर प्रेम सेसाटटांग प्रणाम करना िाटहए और ये क्या? पूरी तरह मैकेतनकर् से?"

सेवक ने दोनों हाथ िोड कर क्षमा यािना की- "सारी, स्वामी िी गर्ती हो गयी।" तब स्वामी िी महारिा कुछ नहीं ंबोर्े। स्वामी िी महारिा के कहने के अनुसार दोनों हाथों से शर्फाफा पकड कर रावर् िी के हाथ में दे कर साटटांग प्रणाम ककया। सेवक के मन में थोडा-सा खेद हुआ कक आि हमारा आिरण ठीक नहींरहा। फर्स्वरूप गुरु महारिा िी को नारािा होना पडा। परन्तुखुशी भी थी कक गुरु महारिा िी ने करुणा करके सेवक के टेढ़ेपन को सीधा ककया। यह सीख सेवक कभी नहींभूर्ेगा।

सेवक अपनेकाम में र्ग गया। पहर्े ेसबके शए कफल्टर कॉफी बनायी, सबको कॉफी देनेके शए हॉर् में र्ानी है और वह भी स्वामी िी महारिा के सामने। मन में भय है कहीं ंइस बार भी कोई गर्ती न हो िाये। गुरुदेव को स्मरण करके सेवक और एक अन्य स्वामी िी सबके शए कॉफी हॉर् में र्े कर आये। पहर्े ेरावर् िी को, कफर बाकी र्ोगों को कॉफी दी गयी। कफल्टर कॉफी की सुगन्ध बहुत अच्छी होती है। स्वामी िी महारिा बोर्े-

"मुझेभी कॉफी बना कर दे दो।" साधारणतः कॉफी, दूधू, िीनी आटद अर्ग रख कर टदये िाते ेहैं। स्वामी िी महारिा खुद शमर्ा कर पीते हैं। स्वामी िी महारिा को अपने कप में कॉफी बना कर टदया गया। सब र्ोगों ने एक-साथ कॉफी पी, बातिीत भी होती रही। नर-नारायण की तपस्या, श्रीकृटण भगवान् ्द्वारा उद्धव िी को बिीववशार् क्षेत्र् में तपस्या के शर्ए भेिना, आटद शंकरािाय लिी द्वारा बिीनाथ िी की प्रततमा की स्थापना आटद अनेक ििाएल ाँहुईं। सेवक ने सबके शर्ए प्रसाद के पैकेट भी तैयार कर शर्ये। स्वामी िी महारिा ने रावर् िी को फर् की टोकरी भेंट की और बाकी सबको प्रसाद के पैकेट टदये।

रावर् िी वापस िानेके शर्ए खडे ेहुए, स्वामी िी महारिा ने अपने आसन से उठ कर रावर् िी को साटटांग प्रणाम ककया। रावर् िी के िरणों के आस-पास कुछ गुर्ाब फूर् की पंखुडुडयााँ चगरी हुई थीं। स्वामी िी महारिा िब प्रणाम करके उठे, उन पंखुडडयों को एकत्र ककया और बोर्े- "िाओ, छोटी तर्टे र्ा कर यह बिीववशार् िी के प्रसादी फूर् मेरे पूिा के स्थान (Altar) में रख दो।" स्वामी िी महारिा के कमरे में िो पूिा-स्थान है, वहााँरख टदया गया। सोिने योग्य है कक कैसी अद्भुत जस्थतत है, कैसा भाव है, कैसी दृजटट है! स्वामी िी महारिा रावर् िी को ववदाई देनेके शर्ए बाहर तक आये। स्वामी िी महारिा को िातपर् पहनानेका सुयोग सेवक को शमर्ा। उस समय स्वामी िी महारिा ने एक-दो क्षण के शर्ए सेवक के शशर पर हाथ कफराया। सेवक ने मुहाँ ऊपर करके स्वामी िी महारिा को देखा, तब स्वामी िी महारिा ने भी सेवक की तरफ देखा। परन्तु वह देखने ेमें िैसे ेकरोडों माताओं (िननी) का वात्सल्य एक-साथ प्रवाटहत हो रहा हो, जिसको भाषा में प्रकाशशत करना असम्भव है।

ॐ

ऋवषकेश कैर्ास आश्रम के पास मधुवन आश्रम है। आश्रम में िगन्नाथ िी का मजन्दर है। हर सार् गिन्नाथ िी की रथ-यात्रा होती है। मधुवन आश्रम के श्री स्वामी भजक्तयोग िी महारिा सन् ्२००५ के फरवरी माह में गुरु महारिा से शमर्ने के शर्ए शाजन्त तनवास, देहरादून में आये थे। गुरु महारिा िी िब हॉर् में आये, तब 'िय िगन्नाथ, िय बर्भि, िय सुभिा माता' बोर् कर श्री स्वामी भजक्तयोग िी महारिा को साटटांग प्रणाम ककया। श्री स्वामी भजक्तयोग िी ने भी स्वामी िी को साटटांग प्रणाम ककया। बाद में श्री स्वामी भजक्तयोग िी बोर्े-"स्वामी िी, आप हमारे गुरुतुल्य हैं, वयोज्येटठ हैं, आप इस दास को प्रणाम करें, अच्छा नहींर्गता है।"

गुरु महारिा िी बोर्े– "आप तो भगवान् ्िगन्नाथ िी के सेवक हैं, परन्तु हमारे शर्ए आप िगन्नाथ महाप्रभु हैं। इसशर्ए म ैंप्रणाम करता हूाँ। अन्तःिक्षुसेदशनल करना ही सही मायने में दशनल है, बाह्य िक्षुसे भगवान् ्की माया और भगवान् ्की शजक्त का दशनल होता है। िो कुछ भी हम देख रहे हैं, उन सबमें परमात्मा के दशनल करना ही सही मायने में दशनल करना है। अपनेअन्दर िो परमात्मा ववद्यमान है, वही परमात्मा सबके अन्दर ववरािमान है। इसको सदा अनुभव करना िाटहए।"

ऐसी ही अनेक िािएलाँहुईं। बाद में गुरु महारिा िी ने श्री स्वामी शशवानन्द िी महारिा की ककताब वैराग्य मार्ा और फर् की टोकरी श्री स्वामी भजक्तयोग िी महारिा को भेंट की।

ॐ

िी र्ोग पुरी के श्री िगन्नाथ महाप्रभु के दशनल के शर्ए गये हैं, उन्होंने मजन्दर के अन्दर गरुड स्तम्भ के पीछे की दीवार में िैतन्य महाप्रभुिी के उँगर्ी के तनशान देखे होंगे,े िो कक िैतन्य महाप्रभु से भाववववभोर हो कर श्री िगन्नाथ िी के दशनल करतेसमय बन गये थे, िैसेकक वह कोई पत्थर नहींगीर्ी शमट्टी या मक्खन हो। सेवक िब छोटा था तो मन में ये प्रश्न उठता था कक ऐसा कभी हो सकता है क्या?

स्वामी िी महारिा हर टदन टहर्नेके शर्ए कमरे से बाहर आते ेथे, पहर्े ेहॉर् के पूिा-स्थान में गुरुदेव की कुसी में प्रणाम करते ेथे। यह शाजन्त तनवास का मकान श्री बी. एन. कौर् िी का है। उन्होंनेआश्रम को अनुदान में टदया है। सारकेश्वरी कौर् माता िी की इच्छा थी कक गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी महारिा हमारे घर पधारें। एक बार कौर् साहब और माता िी िब शाजन्त तनवास में नहींथे, तब सद्गुरु स्वामी शशवानन्द िी महारिा अपनेकुछ सेवक शशटयों के साथ शाजन्त तनवास, देहरादून आये थे। गुरुदेव ने हॉर् में एक सोफे में बैठ कर कुछ समय कीतनल ककया और मिास कॉफी पीने के बाद वापस आ गये थे। िब कौर् साहब और माता िी को पता िर्ा कक गुरुदेव हमारे घर में आ कर कुछ समय कीतनल करने के बाद कॉफी पी कर िर्ेगये थे, तब वे बहुत प्रसन्न हुए। जिस सोफे में गुरुदेव बैठे थे,े उस सोफे में और कोई न बैठै, इसशर्ए उस पर गुरुदेव की एक फोटो रख दी गयी। बाद में उस सोफे में गुरुदेव की एक िोडी पादुका रख दी गयी। तब से स्वामी िी महारिा घुटनेके बर् खडे ेहो कर पादुका में शसर र्गा कर प्रणाम करते ेथे। प्रणाम करने में स्वामी िी महारिा को करीब २० शमनट र्ग िाते ेथे। िब स्वामी िी महारिा की तबीयत ठीक नहींरही, तब भी व्हीर् िेयर में आ कर, उसमें बैठे-बैठे प्रणाम ककया करते ेथे। समय वही २०-२५ शमनट र्ग िाता था। हॉर् में प्रणाम करने के बाद मकान के सम्मुख जस्थत तुर्सीिौरा को प्रणाम करते ेथे।े स्वामी िी महारिा के टदखाये गये स्थान पर तुर्सीिौरा बनाया गया था। स्वामी िी महारिा बोर्ते ेथेकक तुर्सी कोई पौधा नहींहै, वह साक्षात् ्भगवती का स्वरूप है।

र्ृन्दा र्ृन्दा र्नी पश्र्पूर्िजि पश्र्प र्नी।
पुष्पस र नजन्दनी च िुलसी कृष्णिीर्नी ।।
मह प्रस दिननी सर्सवौभ ग्य र्ृधनवी।
आर्धव्य र्ध हर तनत्य ांिुलसी त्र् ांनमोऽस्िुिे ।।
र्ृन्द यै िुलसीदेव्यै पप्रय यै केशर्स्य च।
पर्ष्णुभजतिप्रदे देपर् सत्यर्त्यैनमो नमः ।।

गिरि में पहरे् ेस्वामी ि ी महारि ने तुर्सी पौधा र्गाया, अर्घय,ल गन्ध, कुंकुम, पुटप, धूप-दीप और आरती के साथ पूिा की, तुर्सी ि ी की तीन पररक्रमा करके प्रणाम ककया। उस समय स्वामी ि ी महारि बोर्े थे े कक तुर्सी ि ी की तनत्य सुबह-शाम को पूिा की िाये, ि ो अि तक हो रही है।

हर टदन स्वामी ि ी महारि के तुर्सी ि ी की तीन पररक्रमा और प्रणाम करने में करीब ३० शमनट समय र्ग िाते ेथे। िब से व्हीर् िेयेर में आये, तब पररक्रमा तो कर नहींपाये ककन्तु समय वही ३० शमनट र्ग िाता था। प्रणाम करते ेसमय स्वामी ि ी महारि कुछ स्तोत्र-मन्त्र-पाठ करते ेथे,े िैसे ेस्वामी ि ी महारि तुर्सी माता िी से बात कर रहे हों। िगत् ्के कल्याण के शर्ए, सबकी दु:ख-तनवृवत्त के शर्ए प्राथनला करते ेथे, ि ो बहुत धीरे और बहुत ही प्रेम से करते ेथे। स्वामी ि ी महारि के हाथ की ववशभन्न भावभंचगमाओं की मुिाए ाँअनेक कुछ दशातली थीं। परन्तु वह सब हमारी समझ से परे था। इसके बाद स्वामी ि ी महारि कुछ देर टहर्ते ेथे-कभी नीिे तो कभी छत के ऊपर। टहर्ने के बाद स्वामी ि ी महारि पुनः हॉर् के पूिा-स्थान में कुछ स्तोत्र-मन्त्र-पाठ आववृत्त के साथ प्रणाम करते ेथे। स्वामी ि ी की व्हीर् िेयर पूिा-स्थान की ओर मुहाँ करके होती थी और स्वामी ि ी महारि हाथ िोड कर बहुत ही प्रेम-भाव से स्तोत्र आववृत्त पाठ करते ेथे।

त्र् ांहह पर्ष्णुपर्रवांर्चस्त्रां त्र् ांच देर्ो महेश्र्र:।

त्र्मेर् शजतिरूपोमस तनगुणवस्त्रां सन ि न: ।।

यस्य देर्े ेपर भजतियथव देर्े िथ गुरौ।

तस्यैि ेकर्थिं ह्यथ ःव प्रक शन्ते ेमह त्मन: ।।

यच्च ककांर्चज्गित्सर्ं ंदृश्यि ेश्रूयिेऽपप र् ।

अन्र्हिवहश्च ित्सर्ं ंव्य प्य न र यण: जस्थि: ।।

लि ेपर्ष्णु: स्थले ेपर्ष्णु: पर्ष्णु: परि्व मस्ि्के।

ज्र् लम ल कुले पर्ष्णु; सर्ं ंपर्ष्णुमय ांि गि्।्।

नमोऽस्त्नन्् य सहस्रमूियेव सहस्रप द क्षिमशरोरुर् हरे्।

सहस्रन म्ने ेपुरुष य श श्र्र्ते ेसहस्रकोहियुगध ररणे ेनम: ।।

नमो ब्रह्मण्य देर् य गो ब्र ह्मण हहि य च।

गिद्धिि य कृष्ण य गोपर्न्द य नमो नम: ।।

ककसी स्तोत्र को स्वामी ि ी महारि कभी-कभी बहुत ही प्रेमे से दोहराते ेथे। पहरे् ेभी अनेक बार स्वामी िी महारि को प्राथनला-स्तोत्र-पाठ करते ेहुए देखा है; परन्तु ऐसा प्रेम, ऐसा भाव भजक्त नहींदेखा। हम सब हाथ िोड कर खडे ेरहते ेथे। सेवक के मन में कोई भी प्राथनला का भाव नहींहै, केवर् मात्र खडा रह कर स्वामी ि ी

स महात्मा सुदुरुभलः 12 महारिा का तनरीक्षण करता था। परन्तु तन-मन में अनेक क्षण मारूूम होता था-शरीर में कम्पन,

अश्रुपात,

रोमांिआटद िैसा कक अटट साजत्त्वक क्षण हों। उसको भाषा में प्रकाशशत नहींककया िा सकता। तब याद आया कक िगन्नाथ िी के मजन्दर में िो िैतन्य महाप्रभु िी के उँगरृ्ी के तनशान हैं, वह असम्भव नहींशत-प्रततशत सम्भव है। स्वामी िी महारिा की वह जस्थतत सेवक की समझ से परे है। यहाँभी स्वामी िी महारिा को करीब २० शमनट का समय गर् िाता था। प्रणाम करने के बाद स्वामी िी महारिा अपनेकमरे में िर्े िाते थे।

एक टदन ऐसा ही स्वामी िी महारिा हॉर् में प्रणाम करते समय बोर्े थे- "िोी, आप िब सुबह-शाम आरती और आरती के बाद प्रणाम करते हो तब सारकेश्वरी कौर् माता िी की तरफ से भी गुरुदेव को अवश्य प्रणाम करना। अपनेशर्ए तो प्रणाम करना, माता िी की तरफ से गुरुदेव को प्रणाम करना।"

स महात्मा सुदुरुभलः

ॐ

स्वामी िी महारिा हर टदन टहर्ने से पहर्े तुर्सीिौरा में प्रणाम करतेथे। िब बाररश होती है तब शाजन्त तनवास के सामनेवार्े बरामदे से ही तुर्सी िी को प्रणाम करते थे। ठण्ढी के टदनों में ववशेषकर टदसम्बर और िनवरी के महीनों में अत्यचधक ठण्ढी से तुर्सी के पौधे को बिाये रखना एक िुनौती होता है। कभी रात को ढक कर, कभी गमर्े में रख कर, कभी धूप में रख कर, कफर भी बिाना मुजश्कर् होता था। सन् २००८ अप्रैर् महीने के पहर्े सतताह में एक छोटा-सा तुर्सी पौधा िौरा में र्गाया गया था। शाम को िब स्वामी िी महारिा प्रणाम करने आये, तब बोर्े- "माता िी तो मुझेटदखायी देती नहींहैं, शमट्टी दे कर थोडा-सा ऊपर करो।" उसी समय शमट्टी िार् कर तुर्सी िी को स्वामी िी महारिा को टदखायी देनेर्ायक ऊपर ककया गया। तब स्वामी िी महारिा ने तुर्सी िी को प्रणाम ककया। वह तुर्सी िी का पौधा टदन-प्रततटदन बढ़ता गया। िुर्ाई अगस्त के महीने तक घना और हरा-भरा हो गया था। २८ अगस्त शाम ७ बिे सेवक ने हर टदन की तरह तुर्सी िी की पूिा की। उसी रात ८:११ को स्वामी िी महारिा ब्रह्मर्ीन हो गये। दूसूरे टदन स्वामी िी महारिा के िर्-समाचध के बाद हम सब करीब सुबह १० बिे शाजन्त तनवास पहुँिे। सेवक अन्दर िानेसे पहर्े तुर्सी िी को प्रणाम करने गया तो देखता है कक िैसेकई टदन से तुर्सी माता का महाप्रयाण हो गया हो। कर् शाम को बबर्कुर् हरी-भरी थीः परन्तु एक ही रात में कैसे ऐसा हो गया, आश्िये र्गा। बाररश के टदन में पेड-पौधे के सूखने का कोई कारण नहींहै। तब एक स्वामी िी बोर्े कक स्वामी िी महारिा के साथ तुर्सी माता भी अपने धाम को पधार गयीं। तुर्सी माता िी को स्वामी िी महारिा के कमरे में रखेंगे। अभी उन्हींतुर्सी िी को स्वामी िी महारिा के कमरे में पूिा के स्थान पर रखा गया है।

िय मामं तुर्सी ।

िय माँ वृन्दावनी ।।

ॐ

सन् ्१९९५ में शशवानन्द शतवावषकल बार्क उच््‍ माध्यशमक ववद्यार्य ७ वीं ंकक्षा का एक ववद्याथी पढ़ने-शर्खनेमें सबसे पीछे, परन्तु झूठू बोर्ना, िोरी करना और दुटुटता करने में सबसेआगे। हर टदन उसके नाम से कुछ-न-कुछ शशकायत होती थी। सेवक ने अनेक बार उसे ेसमझाया, भय टदखाया और दण्् भी टदया; परन्तु उसमें कोई बदर्ाव नहीं ंहुआ। एक टदन ऐसेही सेवक ने उसे ेरंगेहाथ पकड शर्या, कफर भी उसनेअपनी गर्ती स्वीकार नहींकी। तब उसको दजण्ति ककया। परन्तुसेवक को कुछ अच्छा नहीं गर्ा। मन अशान्त रहा। र्सा भी है, है तो बच्ा ही-थोडा-सा और समझाना िाटहए था। सेवक अपनेकमरे में गया। कमरे में पहर्े ेसे ही गुरु महारिा स्वामी चिदानन्द िी के ऑडियो प्रविन कैसेटे (र्ौककक िीवन में अर्ौककक साधना) का आधा प्रविन सुन रखा था, साथ-साथ िब कैसेट तरे्यर ऑन ककया तब िो पहर्ा वाक्य था स्वामी िी महारिा का, वह है- "ककसी को हाथ उठा कर मारो मत।" परन्तु सेवक अभी-अभी मार के आया है। और गुरु महारिा बोर् रहे हैं- "ककसी को हाथ उठा कर मारो मत।" बहुत बुरा गर्ा। कैसेट तरे्यर बन्द कर टदया और सोिने ेर्गा कक अध्यापक द्वारा ववद्याथी को सही मागदलशनल कराना, पहर्े ेभर्ी-भाताँत समझाया िाना िाटहए कक सही क्या है गर्त क्या है, क्यों गर्त कम लनहीं ंकरना िाटहए एवं गर्त कम लकरनेसे क्या होता है आटद। उस समय मन में आया कक गुरु महारिा िब इस बार स्कूर् में आयगें ेतब पूछना है कक, अगर ऐसी ही कुछ समस्या होती है, उनको सुधारने के शर्ए, उन्हें दण्् देना िाटहए कक नहीं? परन्तु यह बात अपने मन में रखी, ककसी को बताया नहीं।

कुछ महीनों बाद गुरु महारिा िी ४-५ टदनों के शर्ए स्कूर् में आये। सोिा कक गुरु महारिा िी से फुरसत के समय मन की बात पूछेंगा, परन्तु जिस टदन सुबह गुरु महारिा िी स्कूर् में आये उसी टदन शाम को प्राथनला के पश्ात् ्स्कूर् के सारे अन्तेवाशसयों से शमर्ने के शर्ए प्राथनला-कक्ष में आये और सेवक को बोर्े– "आप िीरा उबार् कर, पानी को छान कर प्राथनला-कक्ष में र्ेकर आओ।" सेवक कुछ समय पश्ात् ्थमोफ्रास्क में िीरा पानी और चगर्ास कटोरी र्ेकर प्राथनला कक्ष में आया। िीरा पानी गुरु महारिा िी के पास रख कर पंजर्् के नीिे बैठ गया। उस समय गुरु महारिा िी गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी द्वारा शर्णखत ववश्व-प्राथनला को समझा रहे थे।

"हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दशनल करें।
तुम्हारी अिनला के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।"

"माता, वपता, िािा, िािी, शशक्षक और तुम्हारे सहपाठी बन्धु तुम्हारे भाई-बहनें, सबमें भगवान् ्वास करते ेहैं। इसशर्ए सबका सम्मान करें, सबको प्रणाम करें, सबका आदर करें। ककसी के प्रतत अनादर, असम्मान नहींकरना। सदा भगवान् ्का नाम स्मरण करते ेरहना। आप भगवान् ्के जिस रूप के प्रतत श्रद्धा रखतेहैं, उसी का नामिप करते ेरहना िाटहए। पढ़ाई के समय में नहीं, बीि में िो खार्ी समय शमर्ा, उसमें भगवत् ्स्मरण करें। उचित समय पर उचित कम लकरना िाटहए। अपनेको शमर्े हुए वतमलान समय को जिसनेव्यथ लगाँवाया उसने अपनेभववटय को व्यथ लकर शर्या। इसशर्ए अपनेसमय को व्यथ लकी बातों में और व्यथ लके कामों में न गर्ाय।ें आप सब ज्ञान अिनल करने यहााँआये हैं उसका सही उपयोग करें। अन्त में गुरु महारिा िी ने पूछा कक आप सबने

स महात्मा सुदुरुभल: 14 पढ़ाई न करके अपना समय व्यथ लगाँवाने के साथ-साथ दूसूरों का समय भी व्यथ लकरके,दुटुटता की अथवा गर्त
कम लककये, तो आपको दण्ि शमर्ना ि़ाटहए कक नहीं?"

एक-साथ कुछ बच्िेबोरे्- "हााँ, शमर्ना ि़ाटहए।"

गुरु महारिा बोरे्- "माता-वपता हो या शशक्षक, सभी आपका भर्ा ि़ाहते हैं। आपको उनकी बात माननी ि़ाटहए और अच्छा बनना ि़ाटहए। ि़ो अपनी गर्ती स्वीकार कर रे्ता है, उसका गर्त कम लधीरे-धीरे कम हो ि़ाता है, तो वह अच्छा इनसान बनता ि़ाता है और ि़ो अपनी गर्ती छुपाता है, उसका गर्त कम लबढ़ता ि़ाता है। और वह धीरे-धीरे बुरा इनसान बन ि़ाता है। कुछ ववशेषे पररजस्थतत में माता-वपता हो या शशक्षक, दण्ि दे सकते हैं, रे्ककन केवर् गर्ती को सुधारने के शर्ए, सही माग लमें र्ानेके शर्ए, परन्तु अपने अन्दर क्षोभ या गुस्सा करके नहीं। िैसे ़कुम्हार कच्िीशमट्टी के घडे के टेढ़ेपन को सही करने के शर्ए एक हाथ से नीिे से सहारा देता है और दूसूरे हाथ में र्कडी रे् कर तयार से ठोकता है। ठीक वैसा ही गुरुिनों का दण्ि होता है। आप सब अच्छे ववद्याथी हैं, दुटुटता नहीं ़ंकरते ़होंगे।" अन्त में गुरु महारिा िी ने साथ में र्ाये हुए बारूूशाही प्रसाद को सबमें ववतरण ककया।

सेवक को बबना पूछे ही अपनेसवार्ों का उत्तर शमर् गया। शायद इसीशर्ए कहा था कक िीरा पानी रे् कर आओ नहीं ़ंतो सेवक गुरु कुटीर में ही रह ि़ाता। ॐ श्री अन्तयाशलमणे नमः !

ॐ

शाजन्त तनवास, देहरादून में स्वामी िी महारिा ने एक टदन सेम और र्ौकी की सब्िी अपने भिोन में रे्नेके शर्ए कहा था। सब्िी सामान्य नमक और हल्दी में उबार्ी होती थी। बािार से िो सेम र्ायी गयी थी, वह ज्यादातर बूढ़ी हो गयी थी और उसमें कीडे भी र्गेथे। र्ौकी अच्छी थी। शाजन्त तनवास के बगीिे से कुछ सेम तोड कर र्ाया, परन्तु इसमें भी कीडेर्गे गये थे। कुछ अच्छा नहींर्गा, क्या ककया ि़ाये? सेवेक ने पहरे् ़नहींदेखा कारण स्वामी िी महारिा सुबह करीब ११ बिे ़को बोरे् थे ़और सेवक शाम को छह बिे ़सब्िी काटने िा रहा है। स्वामी िी महारिा भिोन करनेबैठेंगे ़शाम ७:३० बिेके आस-पास। अभी बािार से सब्िी र्ा कर बनाने के शर्ए समय नहीं ़ंहै। क्या ककया ि़ाये सोि कर पहरे् ़र्ौकी काटना शुरू ककया। रसोईघर में र्गी हुई गुरुदेव की एक छोटी-सी फोटो को देख कर सोि रहा था कक क्या करूाँ, कुछ उपाय बताय।ें ठीक उसी समय एक सेवक आ कर बोर्े- "गुरु महारिा िी ने कहा कक सेम काटने ़से पहरे् ़बीि में र्म्बाई में दो भाग करके देखो, अगर उसमें कीडा नहींहै तो उसे ़काट कर सब्िी बनाओ।"

सेवक की परेशानी दूरू हो गयी और ठीक वैसा ही करने र्गा। सब्िी बन गयी। स्वामी िी महारिा ने अपनेसमय में भिोन ककया। सोिने योग्य है कक स्वामी िी ने सुबह कहा था कक वे सब्िी में क्या-क्या रे्ंगे।

स महात्मा सुदुर्लभ: 15 सेवक ने शाम को बनाना शुरू ककया। इससे पहरे् ेअनेक बार सेम बनाया होगा परन्तु स्वामी िी महारिा कभी
कुछ नहीं ंकहा। सेवक के मन की बात मन में है। अन्तयामली समझ गये और समाधान भी कर टदया।

ॐ

एक बार एक बडेआश्रम के महामण्रिे्श्वर अपनेदो शशटयों के साथ स्वामी िी महारिा के दशनल करने शाजन्त तनवास, देहरादून आये थे। अनेक वष लपहरे् ेगुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी महारिा के समय में यह स्वामी िी स्वगाश्रलम में रहा करते ेथे। कभी शशवानन्द आश्रम के पुस्तकार्य में पढ़ने ेके शर्ए आया करते ेथे। कभी स्वामी शशवानन्द िी के सत्संग में आया करते ेथे। कभी दवाई के शर्ए अस्पतार् आया करतेथे। तब से स्वामी िी महारिा िी के साथ इनका सम्बन्ध है। िब यह स्वामी िी महामण्रिे्श्वर पद से सुशोशभत हुए उस समय भी स्वामी िी महारिा उपजस्थत थे। ऐसा ही कुछ पुराने टदनों की बात हुई, बाद में यह स्वामी िी स्वामी िी महारिा से बोरे्- "स्वामी िी, मेरे मन में कुछ शंका है। उसका समाधान आपसेबढ़ कर कोई और नहींकर सकता? समाधान से केवर् मेरा नहीं अवपतु यहााँउपजस्थत सब र्ोगों का भी कल्याण होगा। हम सबके कल्याण के शर्ए आपके सामनेप्रश्न रखता हूाँ।"

महामण्रिे्श्वर िी ने पूछा- "अपनेसे कोई उच् प्रततजटठत व्यजक्त, कोई सम्मानस्पद व्यजक्त, उच् आध्याजत्मक व्यजक्तत्व से शमर्ने सेखुशी तो होती है उनका सम्मान भी व्यक्त करतेहैं। र्ेककन उनके प्रतत हमारे मन में ईटया लभाव उत्पन्न हो िाता है, तो हम क्या करें जिससे ेहम ईटया लभाव से मुजक्त पा सकें ? हमनेवेद-वेदान्त, उपतनषद् आटद अनेक शास्त्र पठन-पाठन ककये, महामण्रिे्श्वर बने, आश्रम के अचधकारी बने, सहस्र अनुयायी हुए; परन्तु जिसके शर्ए साधु बने वह अभी तक नहींहुआ? यह बात तो सबको बता नहींसकते, इसशर्ए आपके सम्मुख यह बात रखता हूाँ। कृपया हमारा मागदलशनल करें।"

स्वामी िी महारिा कुछ देर िुप रहे और कफर बोरे्- "उपाय बहुत सरर् और सहि है। सबके भीतर भगवान् ्तनवास करते ेहैं, यह भावना सदा-सवदला बनायेरखें। अभ्यास में िार्नेके शर्ए बारम्बार प्रयास करना िाटहए। सबमें अगर भगवान् ्का दशनल हो तब ईटया लभाव कहााँरह िायेगा। नहींतो जिसके प्रतत मन में ईटया लभाव उत्पन्न होता है, उसको साटटांग प्रणाम करें और ववनम्र भाव से हाथ िोड कर क्षमा-यािना करें। और उनको बोर्ें कक आपके प्रतत मेरे मन में ईटया लभाव होता है, आप कृपा करके मुझे क्षमा करें। ऐसेबहुत ही शीघ्र ईटया लभाव दूर हो िायेगा। अगर यह नहींकर पाय ेंतो आप मानशसक रूप में उनको बारम्बार प्रणाम करें, क्षमा यािना करें और साथ ही साथ परमात्मा से तहेटदर् से प्राथनला भी करें। बारम्बार प्रयास करते ेरहें। आप जिस भाव से यह बात मुझे े बोर्े हैं वैसेही आपनेइन बातों के शर्ए भगवान् ्से प्राथनला की है क्या?

"अपनेकमरे में दरवािा बन्द करके एकान्त में भगवान् ्से, इटटदेव से तनटकपट शशशुवत् ्प्राथनला करनी िाटहए। आश्रम में आपके अनेक दातयत्व हैं, अनुयातयओंसे भरे हुए हैं। शायद एकान्त न शमर् पाये। अपनेआश्रम में अगर एकान्त न हो सके तो दूर कहीं ंएकान्त में ऐसा प्रयत्न करना िाटहए। अपनेइटटदेव के चित्र के सम्मुख

घुटने के बर् खडा हो कर दोनों हाथों को िोड कर, भजक्तभाव से तहेटदर् से व्याकुर्ता से रो-रो कर प्राथनला करनी िाटहए। हे प्रभु! तेरी ही कृपा से यह सब पठन पाठन कर पाया परन्तु यह ईटया लभाव से पार नहींहो पाया। आत्म-उपर्जब्ध के शर्ए पठन-पाठन ककया, वविार-मनन ककया, परन्तु इसमें असफर् ही रहे। आप सवसलमथ लहैं! आपके शर्ए यह क्या है? मुझ पर दया करो प्रभु, मुझ पर कृपा करो प्रभु। यह प्राथनला कर्ाकार के अशभनय की तरह नहीं,ं टदर् से, व्याकुर्ता से, आतुरता सेरोतेहुए होनी िाटहए। जिसकी व्याकुर्ता जितनी गहरी होगी उसको उतनी ही शीघ्र सफर्ता शमर्ेगी। र्ेककन अहंकार सबसे बडी बाधा है। साथ ही साथ िो सब पठन-पाठन ककया, िो ज्ञान अजिनल ककया उसको अपने िीवन में, व्यवहार में उतारना िाटहए। वैसा ही िीवन व्यतीत करना िाटहए। तब हमको ही शीघ्र सफर्ता शमर्ेगी।" ऐसेही अनेक बातें हुईं।

ॐ

शशवानन्द आश्रम के स्वामी षण्मुखानन्द िी शशर्डी साईं बाबा को बहुत मानते ेथे। वह स्वामी िी महारिा के गुरुभाई भी थे। स्वामी षण्मुखानन्द िी शीशमझाडी जस्थत साईं मजन्दर में िाते ेथे। वहााँिी शाम को कुछ न कुछ प्रसाद ववतरण करतेथे। स्वामी षण्मुखानन्द िी के अनुरोध पर स्वामी िी महारिा वहााँगये थे।

स्वामी िी महारिा देहरादून सेसमोसा, गुर्ाबिामुन, किू ूबफी, िॉकर्ेट आटद र्े कर वहााँगये थे। मजन्दर में पहुाँिकर स्वामी िी महारिा ने साईं बाबा को प्रणाम ककया, मार्ा िढ़ायी, धूप, दीप, नैवेद्य और अन्त में आरती की; वहााँभी प्रसाद की व्यवस्था की गयी थी। वह प्रसाद और स्वामी िी महारिा के र्ाये हुए प्रसाद का सब बच्िों को बैठा कर भोिन कराया गया। स्वामी िी महारिा ने कुछ शसक्के भी बच्िों को ववतररत ककये। सभी बच्िों ने बहुत ही आनन्द से प्रसाद पाया।

देहरादून रािपुर रोड पर एक साईं मजन्दर है। स्वामी िी महारिा ने एक िनवरी सन् ्२००४ को स्वामी षण्मुखानन्द िी को बुर्ाया था साथ में साईं मजन्दर िाने के शर्ए। एक स्वामी िी, स्वामी षण्मुखानन्द िी को र्े कर समय पर शाजन्त तनवास में उपजस्थत हुए। सुबह करीब ११ बिे ेको स्वामी िी महारिा, स्वामी षण्मुखानन्द िी, बिगेडियर सब्बरवार् िी, महेश बब्बर िी और हम सब सेवक शाजन्त तनवास से तनकर्,े परन्तु साईं मजन्दर में पहुाँिकर देखा, इतनी भीड थी कक उसमें स्वामी िी महारिा को र्े कर दशनल कराना कटठन था। एक तो नया सार् ऊपर से गुरुवार होने से बहुत र्म्बी कतार र्गी हुई थी। स्वामी िी महारिा बोर्े कक अगर्े ेटदन शुक्रवार २ िनवरी को आयगें। उस टदन वापस आ गये।

शुक्रवार सुबह ११ बिे ेके आस-पास सभी साईं मजन्दर पहुाँि।े स्वामी िी महारिा के आदेश अनुसार साईं बाबा िी के शर्ए एक शॉर्, एक बडी-सी फूर्मार्ा और एक बडी फर् की टोकरी साथ में र्ी थी। ठण्ढ तो बहुत थी, परन्तु स्वामी िी महारिा ने मजन्दर पहुाँिते ही अपनेपैर से मोिे ेतनकार् टदये। साईं बाबा को साटटांग प्रणाम ककया और सभी ने प्रणाम ककया। आि मजन्दर में बहुत ही कम र्ोग थे। स्वामी िी महारिा आगे–आगे ेऔर पीछे-पीछे स्वामी षण्मुखानन्द िी और उनके पीछे बाकी सब। स्वामी िी महारिा ने साईं िरणों में शशर र्गा कर

प्रणाम ककया। पास में एक दान-पात्र था, उसमें कुछ रुपये िारे् ेऔर सबको बोरे्- "आप र्ोगों को भी कुछ-न-कुछ दानपात्र में िार्ना िाटहए।" िो फर् की टोकरी, फूर्मार्ा और शॉर् रे् कर गये थे,े उसको उठा कर वेदी (मण्पि) पर रखा। वहााँदो पुिारी थे। दोनों स्वामी िी महारिा को पहरे् ेसे िानते ेथे। िो फूर्मार्ा रे् कर गये थे, उसी मार्ा को एक पुिारी ने रे् कर स्वामी िी के गरे् में िार् टदया। तब एक स्वामी िी बोरे्- "स्वामी िी तो बाबा के शर्ए यह मार्ा र्ाये थे। आपने स्वामी िी को पहना टदया?" पुिारी ने तुरन्त ही स्वामी महारिा के गरे् से मार्ा तनकार् कर साईं बाबा के गरे् में िार् दी। तब वह स्वामी िी कफर बोरे्- "आपनेस्वामी िी को मार्ा पहनानेके बाद उसी मार्ा को कैसे ेबाबा को पहना टदया?" र्ग रहा था िैसे ेपुिारी िी थोडे ेघबराये हुए हैं। पुिारी िी ने हडबडाते ेहुए तुरन्त उसी मार्ा को साईं बाबा के गरे् से उतार कर स्वामी िी महारिा को पहना टदया।

स्वामी िी महारिा तत्कार् धीर गम्भीर और मधुर भाव से अपनी ही ओर इशारा करके बोरे्– "मेरे और बाबा के बिी में कोई फकल नहींहै।" एक-दो पर् मौन रहनेके बाद बोरे्- "बाबा के अन्दर िो परमात्मा ववरािमान है, मेरे अन्दर भी वही परमात्मा ववरािमान है और आप सबमें वही परमात्मा ववरािमान है।" कफर स्वामी िी महारिा ने वहााँरखा हुआ िरणामृत खुद शर्या और सबको भी िरणामृत टदया।

तब तक साईं बाबा के मध्याह्न भोग र्गने का समय हो गया। पुिारी िी ने धूप, दीप, नैवेद्य समवपतल ककया और स्वामी िी महारिा को िामर सेवा करने को दी। स्वामी िी महारिा ने हम सबको िामर सेवा करने को दी। कफर आरती हुई। स्वामी िी महारिा ने आरती र्ी और प्रणाम ककया। हमनेसब भी आरती रे् कर प्रणाम ककया। पुिारी िी ने सबको िना और बताशा का प्रसाद टदया। मजन्दर से बाहर आ कर िहााँअखण्ि धूनी िर्ती है, स्वामी िी वहा ाँगये और वहााँसाटटांग प्रणाम ककया। धूनी िर् नहीं ंरही थी तो स्वामी िी ने र्कडी को थोडा-सा अन्दर करने के बाद फूक मार कर िर्ाया। स्वामी िी ने ववभूतत (ऊदी) अपनेमाथेपर र्गायी और हम सबको र्गाने के शर्ए बोरे्। हम सबनेप्रणाम करके ववभूतत माथे पर र्गायी, स्वामी िी महारिा धूनी की प्रदक्षक्षणा करके मजन्दर सेबाहर आये।

मजन्दर में आि भण्िारा था। गेट के पास प्रसाद बाटाँ रहे थे। प्रसाद में पूरी, हर्वा, आर्ू, कद्दू, ू िना दार् की सब्िी थी। एक सेवक पत्तर् में कुछ प्रसाद रे् आये थे। शाजन्त तनवास आनेके बाद स्वामी िी महारिा कुछ समय धूप में टहरे्। स्वामी िी महारिा वरांिामें बैठैनेके बाद साईं बाबा का प्रसाद र्ाने को कहा और बब्रगेडियर सब्बरवार् िी, महेश बब्बर िी को पास बुर्ाया। सब्बरवार् िी को घुटने के बर् खडे ेहो कर ऊपर की ओर देखने े को बोरे्। एक िम्मि में हर्वा रे्कर उनको णखर्ाया। ठीक वैसेही बब्बर िी को हर्वा णखर्ाया मानो दोनों कृतकृत्य हो गये, धन्य हो गये। दोनों के घर के शर्ए भी थोडा-थोडा साईं बाबा का प्रसाद टदया। अपनेशर्ए थोडा प्रसाद रख के बाकी सब प्रसाद सबमें बाटाँ देने के शर्ए बोरे्।

ॐ

सन् ्२००८ में एक बार शाजन्त तनवास में शाम को गुरु महारि िी टहर्ने के बाद हॉर् के पूिा स्थान में प्रणाम के बाद स्तोत्र-पाठ कर रहे थे।

"नमोऽस्त्नन्ि य... सहस्रकोहियुगध ररणेनमः।।"

यह स्तोत्र बहुत ही प्रेम से बारम्बार दोहराते ेरहे, एक स्वामी िी बोरे- "स्वामी िी महारि िैसे ेबोर् रहे हैं र्ग रहा है कक िैसे ेस्वामी िी महारि ही सहस्रमूतत लहैं, सहस्रपाद हैं और अनन्त हैं।"
स महात्मा सुदुर्भलः

गुरु महारि ने यह बात सुन र्ी और तत्क्षण बोरे- "यस (Yes)...!"

अपनी छाती में हाथ रख कर बोरे- "वही परमात्मा इसमें और सबमें ववद्यमान है, िो अनन्त है, िो सवव्लयापक है, िो सहस्रमूतत लहै उनको प्रणाम है, बारम्बार प्रणाम है।" गुरु महारि ने कफर दूसूरे स्तोत्रों का पाठ ककया और बाद में अपने कमरे में िरे्गये।

ॐ

मा ाँआनन्दमयी आश्रम के स्वामी भास्करानन्द िी महारि सन् ्२००४ अप्रैर् माह में स्वामी िी महारि के दशनल के शर्ए शाजन्त तनवास आये थे। स्वामी िी महारि ने स्वामी भास्करानन्द िी को 'िय मा'ाँ कह कर प्रणाम ककया और स्वामी भास्करानन्द िी ने गुरु महारि को प्रणाम ककया। यहााँभी गुरु महारि िी स्वामी भास्करानन्द िी में िैसै ेमा ाँआनन्दमयी के दशनल कर रहे थे। उसी समय अनेक पुराने टदनों की िििल हुई।

गुरु महारि िी बोर् कक एक बार िब वे अपनी यात्रा से आश्रम को र्ौट रहे थेतो ट्रेन से हररद्वार स्टेशन में उतरनेके बाद पता िर्ा कक मा ाँआनन्दमयी अभी कुछ टदन से कनखर् जस्थत अपनेआश्रम में हैं। गुरु महारि ने अपनेसेवक के हाथ अपना सामान गुरु तनवास, ऋवषकेश भिे टदया और खुद मा ाँके दशनल के शर्ए कनखर् िरे्गये। ठण्ढी के टदन और सुबह का समय था। गुरु महारि सीधे ेमा ाँके कमरे के पास पहुाँि। मा ाँकी एक सेववका ने िा कर मा ाँको बताया कक शशवानन्द आश्रम से बाबा आये हैं। मा ाँआनन्दमयी को सभी िन 'मा'ाँ कह कर पुकारते थे। गुरु महारि भी 'मा'ाँ सम्बोधन करते ेथे।े मा ाँआनन्दमयी गुरु महारि िी को 'बाबा' कह कर सम्बोचधत ककया करती थीं। मा ाँअववम्बं अपनेकमरे सेबाहर आयीं। गुरु महारि िी ने मा ाँको साटटांग प्रणाम ककया। मा ाँबोर्ी- "बाबा, यहााँ ककसको प्रणाम करते ेहो? यहााँ न आप हैं, न म ैंहूाँ, न कोई और है! कफर ये प्रणाम कैसा ! यहााँतो सब अतनत्य, असत्य है। बस हर िगह वही एक ही है। कफर यह व्यवहार कैसा?"

गुरु महारि िी शसर नीिी करके मौन रहे। मा ाँने गुरु महारि िी को अपने कमरे में बुर्ा कर बैठाया। उस समय अनेक ििाएल ाँहुईं, गुरु महारि िी को दूधू पीनेको टदया। आणखर में गुरु महारि िी ववदाई के समय बोरे- "मेरा यहााँआनेका कोई प्रोग्राम नहींथा, ऋवषकेश िा रहा था कक सुना आप यहााँहैं, तो सीधा आ गया

 आपके दशनल करने को। इतनी सुबह रास्ते ◌में कुछ भी नहीं शमऱ्ा, इसशर्ए खाऱ्ी हाथ आ गया।" गुरु महारिा ि◌ी
बहुत ववनम्र भाव से हाथ ि◌ोड कर मा ◌ॉँसेक्षमा-यिाना करने र्गे-"मा,◌ॉँ मुझे क्षमा करें। आते ◌ेसमय भेंट स्वरूप म ◌ैं कुछ ऱ्ा नहींपाया।"

मा ◌ॉँबोऱ्ी- "बाबा! मुझे ◌ेमा ◌ॉँकहते ◌ेहो, कफर भी ऐसी बात करते ◌ेहो। मा ◌ॉँके शर्ए बाबा को शमर्ना ही सबसे बडी भेंट देना है। कफर बाहर की ककसी ि◌ीि◌ी की क्या आवश्यकता है?"
कफर मा ◌ॉँसे ववदा ऱ्े कर गुरु महारिा ि◌ी गुरु तनवास आये। कुछ महीने बाद आनन्दमयी आश्रम कनखऱ् में संयम सतताह (साधना सतताह) का समय तनकट आया। मा ◌ॉँआनन्दमयी के अनुरोध पर गुरु महारिा ि◌ी हर साऱ् संयम सतताह के शर्ए कनखऱ् ि◌ाते ◌ेथे। गुरु महारिा ने संयम सतताह में ि◌ानेसे पहऱ्े ◌ेएक बडी-सी बोरी साफ करके बताशे ◌ेभर कर रखे। समय पर गुरु महारिा ि◌ी बताशे ◌ेकी बोरी को साथ ऱ्े कर मा ◌ॉँआनन्दमयी आश्रम में पहुॉँि◌े।
पहऱ्े ◌ेमा ◌ॉँके कमरे के पास गये। मा ◌ॉँकी सेवेवका अन्दर ि◌ा कर मा ◌ॉँको बोऱ्ी- "शशवानन्द आश्रम से बाबा एक बडी-सी बोरी में कुछ ऱ्ाये हैं।"

मा ◌ॉँबोऱ्ी- "बाबा अवश्य बताशे ◌ेऱ्े कर आये होंगे, तू ि◌ल्दी से पूण ल(मा ◌ॉँका एक सेवक) को कह दे कक बिाार से बताशे ◌ेनहींऱ्ायेगा। मनैंउसको अभी बिाार सेबताशे ◌ेऱ्ानेको कहा था। तुम ि◌ल्दी ि◌ाओ, नहींतो पूण ल बिाार ि◌ऱ्ा ि◌ायेगा।"

मा ◌ॉँकमरे से बाहर आयीं, गुरु महारिा ि◌ी ने साटटांग प्रणाम ककया। मा ◌ॉँने गुरु महारिा ि◌ी का स्वागत करके, अपने कमरे में बबठाया। उसी समय मा ◌ॉँकी सेववका ने आ कर बताया कक पूण लबिाार ि◌ऱ्ा गया है। कुछ समय बाद पूण लबिाार से वापस आया और मा ◌ॉँसे बोऱ्ा - "िाि वह दुकान बन्द थी, बताशे नहींशमऱ्े।"

मा ◌ॉँबहुत खुशी में बोऱ्ी- "बाबा तो बताशे ◌ेऱ्े आये हैं और क्या ि◌रूरत है।"

संयम सतताह के अन्त में माॉँसबको रूमाऱ् और बताशे ◌ेप्रसाद के रूप में देती हैं। ऐसी ही अनेक बातें हुई।
बाद में स्वामी भास्करानन्द ि◌ी के साथ आयी हुई एक ववदेशी मटहऱ्ा गुरु महारिा ि◌ी से बोऱ्ी- "ऐसेतो म ◌ैंध्यान करती हूॉँ, परन्तु आपके मत से मुझे ध्यान कैसे ◌ेकरना ि◌ाटहए?"

गुरु महारिा ि◌ी बोऱ्े- "ध्यान से बडी कोई आध्याजत्मक सम्पवत्त नहीं, ध्यान से पहऱ्े ◌ेउसकी पृटठभूशम तैयार करनी ि◌ाटहए। पहऱ्ेयम, तनयम, आसन, प्राणायाम आटद का अभ्यास करना ि◌ाटहए। ववशेषकर यम-तनयम का पार्न करना ि◌ाटहए। यम के पाॉँि शसद्धान्त हैं-सत्य, अटहंसा, ब्रह्मिय,ल अपररग्रह, अस्तेय (ि◌ोरी न करना)। तनयम के पाॉँि शसद्धान्त हैं-शौि, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणणधान। इनका अपनेिीवन में पार्न करना ि◌ाटहए। एक आसन पर अचधक से अचधक समय बैठने ◌ेका अभ्यास करना ि◌ाटहए। प्राणायाम का अभ्यास करना ि◌ाटहए। प्राणायाम सेप्राण वायु, प्राण वायु से मन को जस्थर करना सहि होता है। तब ध्यान सफऱ् होता है। ध्यान में उन्नतत होती है। आप िैसे ◌ेध्यान कर रही हैं, वैसेअभ्यास करती रहें, पर साथ में यह सब

भी अभ्यास करें। आप साधना में थोडा दुबुर्ल हैं। और आप हररद्वार, ऋवषकेश िैसी तपोभूशम में आयी हैं तो यहाँ उसका सदुपुयोग करें। टदन में २०० मार्ा िप करें। गीता के कुछ श्र्ोक अथ लसटहत पाठ करें। पतंशिर् महवष लकृत रियोग, भजक्तयोग, ध्यानयोग आटद का पाठ करें। अपनी साधना में तनरन्तरता बनाये रखें।" बाद में गुरु महारिा ने प्रसाद के साथ ववदाई दी।

ॐ

गुरु महारिा ने आश्रम आनेके अनेक वष लबीत िाने तक बिीनाथ िी के दशनल नहींककये थे। िब गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी महारिा को पता िर्ा तो वे बोर्े- "हर सार् आप अनेक भक्तों को बिीनाथ भेिते हो। यात्रा की ववस्तृत् िानकारी देते ेहो, परन्तु आप खुद नहींगये। आप पहर्े िा कर बिीनाथ िी के दशनल कीजिए।" गुरु महारिा ने आश्रम का कुछ काम है, वह काम कर र्ेने के बाद िाने की इच्छा व्यक्त की। परन्तु गुरुदेव बोर्े- "काम तो िर्ता ही रहेगा। आप पहर्े ेबिीनाथ िी के दशनल करो।" गुरुदेव की आज्ञा स्वामी िी महारिा को माननी पडी।

गुरुदेव ने एक पहाडी र्डके को भेिा िो स्वामी िी महारिा के साथ खच्िर में सामान र्े िायेगा। उस समय पैदर् ही िाना होता था। यहाँतक की गुरुदेव ने िायपत्ती, िीनी, माचिस, मोमबत्ती आटद सामान र्े िानेके शर्ए टदया और साथ में कुछ रुपये भी टदये। गुरुदेव उस र्डके शम्भू प्रसाद से बोर्े कक स्वामी िी महारिा का ख्यार् रखना। स्वामी िी महारिा स्वामी कृटणानन्द िी महारिा और स्वामी वेंकटेशानन्द िी महारिा को कुछ काम समझा कर और गुरुदेव सेआशीवादल र्े कर बिीनाथ धाम की ओर िर्े। उस समय स्वामी िी महारिा के पास एक िोडी मोिा था। उसको कभी पैर को ठण्ढ र्गी तो पैर में और कभी हाथ में ठण्ढ र्गी तो हाथ में पहन र्ेतेथे। कुछ टदन में बिीनाथ धाम में पहुँिकर बिीववशार् के दशनल ककये। बिीनाथ धाम में एक-दो साधु बीमार थे। स्वामी िी महारिा उन साधुओं की सेवा करने र्गे, तब कुछ दवाई की आवश्यकता हुई। आि की तरह वहा ाँ इतनेसारे दुकान बािार नहीं ाथेऔर न ही दवाई की व्यवस्था थी। स्वामी िी महारिा ने आश्रम से कुछ दवाई र्ानेके शर्ए शम्भू प्रसाद िी को भेिा और खुद बीमार साधुओं की सेवा की, उनके पथ्य की व्यवस्था की। कुछ टदन बाद शम्भू प्रसाद दवाई र्े कर बिीनाथ पहुाँिा। साधुओं ने भी पूण लआरोग्य प्रातत ककया। और कुछ टदन बाद स्वामी िी महारिा आश्रम वापस आये। तब से शम्भू प्रसाद िी स्वामी िी महारिा के पास आतेिाते ेरहते ेथे। परन्तु टदन-प्रततटदन स्वामी िी महारिा के व्यस्त कायक्रलम और ववदेश दौरे से दूरूरयााँ भी बढ़ती गमी। यह बात स्वामी िी महारिा ने कभी ककसी प्रसंग में बतायी थी।

स्वामी िी महारिा ने देहरादून आनेके अनेक वष लबाद शम्भू प्रसाद िी को याद ककया। शम्भू प्रसाद िी ने भी अपनी बीमारी और आचथकल समस्या में स्वामी िी महारिा को याद ककया होगा। स्वामी िी महारिा की तबीयत भी ठीक नहींरहती थी। एक टदन शम्भू प्रसाद िी के कोई ररश्तेदार शाजन्त तनवास आये और बताया कक शम्भू प्रसाद िी बीमार हैं और स्वामी िी महारिा को शमर्ना िाहते हैं। परन्तु स्वामी िी महारिा की तबीयत

ठीक न होनेसे यह सम्भव नहींहुआ। बाद में िब यह स्वामी िी महारिा को बताया गया कक शम्भू प्रसाद बीमार है, शमर्ना िाहता है। तब स्वामी िी बोरे्– "म ैंकई टदनों से उन्हें याद कर रहा था, परन्तु उनका कोई फोन नम्बर नहींथा। कैसे ेपता र्गाया िाये?" आश्रम में िो पुरानेर्ोग शम्भू प्रसाद िी को िानते ेथे, उनको पूछा गया, परन्तु कोई पता नहीं ंशमर्ा। कुछ महीनों बाद शम्भू प्रसाद िी को पता िर्ा कक स्वामी िी महारिा उनसे ेशमर्ना िाहते हैं।

एक टदन शाम से पहर्े ेशम्भू प्रसाद िी शाजन्त तनवास पहुँिे। स्वामी िी महारिा को अवगत कराया गया। स्वामी िी महारिा ने उसी समय उनको अपने कमरे में बुर्ाया। स्वामी िी महारिा बहुत ही प्रेम से शम्भू प्रसाद से शमर्े िैसे ेएक माँअपने कई सार्ों से बबछडेबच्िेसे शमर् रही हो। शम्भू प्रसाद िी का टदर् और आखाँ भर आयीं। शम्भूप्रसाद िी देहरादून के रायपुर में पत्नी के साथ रहते ेथे। बेटे की शादी हो गयी है। वह दूसूरी िगह अपना कुछ काम कर रहा है। स्वामी िी महारिा ने सब हार्िार् पूछने के बाद कुछ आचथकल सहायता के साथ ववदा ककया। कुछ टदन बाद पूरे पररवार को शमर्ने के शर्ए बुर्ाया।

कुछ महीनों बाद शम्भूप्रसाद िी बीमार पडे। िब ये बात गुरु महारिा िी को पता िर्ी तो िा. चगर्होत्रा िी को बुर्ा कर उनके अस्पतार् में रख कर उपिार करने का अनुरोध ककया। िा. चगर्होत्रा िी ने भी उनकी अच्छी से सेवा की। परन्तु शम्भूप्रसाद िी को टदन में अनेक बार िाय और बीडी पीने की आदत थी, िो उनकी बीमारी के शर्ए घातक थी। इसशर्ए अस्पतार् के स्टाफ के ऊपर वह बहुत गुस्सा करते ेथे। परन्तु िॉ. चगर्होत्रा िी तियार से समझा कर भोिन और दवाई देते ेथे। तबीयत ठीक होनेके बाद घर में आये।

एक बार स्वामी िी महारिा ने शम्भू प्रसाद के घर िानेकी इच्छा व्यक्त की। पहर्े ेएक स्वामी िी उनका घर देख कर आये। दूसूरे टदन स्वामी िी महारिा शम्भू प्रसाद िी के घर गये। शम्भू प्रसाद िी स्वामी िी महारिा को देख कर िककत हो गये। स्वामी िी महारिा शम्भू प्रसाद िी के कन्धेमें हाथ रख कर उनके पास बबस्तर पर बैठे। तबीयत के शर्ए बहुत समझाया िैसेकक माता-वपता अपनेबच्िेको समझाते ेहैं। हर समय भगवान् ्का नाम स्मरण करनेको कहा। वापस आते ेसमय रास्ते ेमें बोर्े- "वे िैसे ेगन्दे बबस्तर में सो रहे हैं, उसमें तो अच्छा आदमी भी बीमार हो िायेगा।" अगर्े ेटदन शम्भू प्रसाद िी के शर्ए गद्दा, तककया, रिाई, बबछानेकी िादर, कम्बर् आटद खरीद कर भेिे। वह िब कभी बीमार हुए, स्वामी िी महारिा ने सेवा की सारी व्यवस्था की। आणखरी समय में िब शम्भूप्रसाद िी बीमार हुए तब स्वामी िी महारिा ने ववश्वनाथ मजन्दर में पूिा और हवन करवाया। उसके बाद उनका देहान्त हो गया। उस समय भी उनकी आत्म-शाजन्त, आत्म-कल्याण के शर्ए प्राथनला की। "योगक्षेमं ंवहाम्यहम्"् (गीता : ९/२२)।

ॐ

गुरु महारिा अपने यात्राकार् में अनेक बार िेन्नैगये हैं, पत्तमैआनेिानेके शर्ए िेन्नैसे हो कर िाना होता है। गुरु महारिा िी को र्ेनेऔर छोडने कुछ चगनेिुने र्ोग आते ेथे। एक सज्िन हमेशा खडे-खडे े'साष्टांग

प्रणाम' बोर्ते ेथे। गुरु महारि िी एक बार पत्तमिसे िेन्नैट्रेन से आयेथे, िेन्नै ईगमोर स्टेशन में ट्रेन पहुाँि गयी। उस समय बाररश भी हो रही थी। तर्ेटफाम लभी गीर्ा था। गुरु महारि गाडी से नीि ेउतरे, तब वह सज्नि हाथ िोड कर बोर्े- "साटटांग प्रणाम स्वामी िी!" गुरु महारि ने वहींभीड में थोडी-सी िगह में, कीिड िैसे े तर्ेटफाम लमें उन सज्नि को साटटांग प्रणाम ककया। उपजस्थत सभी र्ोग हैरान हो गये। गुरु महारि उठ कर खडे े हुए, कपडे सब खराब हो गये थे। थोडा-सा आगे िानेके बाद गुरु महारि मुस्कराते हुए उन सज्नि से बोर्े– "इसको ही साटटांग प्रणाम कहते ेहैं। प्रणाम करते ेसमय अपनेशरीर के आठ अंग भूशम से र्गें, उसको साटटांग प्रणाम कहते ेहैं।" कफर अपने गन्तव्य की ओर िर्ेगये। तब से वह सज्नि कभी साटटांगं प्रणाम बोर्े नहीं, कहीं ं भी हो गुरु महारि को देखते ेही साटटांग प्रणाम ही करते ेथे।

ॐ

शाजन्त तनवास में कुछ काम िर् रहा था। ऋवषकेश शशवानन्द आश्रम से शमस्त्री और मिदूर काम के शर्ए आये थे। परन्तु एक मिदूर की और िरूरत पडी, तब देहरादून से एक मिदूर ककया गया। र्ेककन वह कम उम्र का था। उसका नाम रक्षाराम था और वह फैिाबाद के पास का रहने वार्ा था। वह नवीं ंकक्षा की परीक्षा दे कर आया था। उसके घर वार्ों ने मना कर टदया कक हम तुमको आगे ेनहींपढ़ा सकते। परन्तु रक्षाराम को पढ़ने की बहुत इच्छा थी। गावाँ में टदहाडी मिदूरी का अचधक पैसा नहींशमर्ता है, इसीशर्ए देहरादून अपनिेीिा के पास आया ताकक गशमयलों की छुट्टी में पैसा कमा कर अपना पैसा िमा कर सके।

बि यह बात गुरु महारि को पता िर्ी, तो रक्षाराम को अपने कमरे में बुर्ा कर बात की। उसनेबताया कक दसवीं ंपढ़ने ेके शर्ए मुझे ेकरीब ७ हिार रुपये की आवश्यकता है, इसशर्ए मिदूरी करने आया हूाँ। गुरु महारि िी ने पूछा- "आप दसवींके बाद क्या करोगे?े"

रक्षाराम ने कहा - "आई. एस. सी. व बी. एस. सी. करूाँगा।"

स्वामी िी महारि ने पूछा- "गावाँ में आपके कार्ेि है? नहींहै तो निदीक कहााँ है?"

रक्षाराम ने कहा- "गावाँ में कार्ेि नहींहै। गावाँ के निदीक फैिाबाद में कार्ेि है। गावाँ से करीब ३०

ककर्ोमीटर होगा।"

स्वामी िी महारि बोर्े- "दसवीं ंके शर्ए ७ हिार रुपये देते ेहैं। परन्तु अभी गावाँ िाओ, वहा ाँअपनेस्कूर् के ककसी शशक्षक से पूछो कक आई. एस. सी., बी. एस. सी. की पााँि सार् की पढ़ाई में कुर् शमर्ा कर ककतना खिा ल आयेगा? उसमें कार्ेि की फीस, ड्रेस, हास्टर् की फीस, कम्तयूटर फीस, ट्यूशन फीस, आना–िाना आटद सब-कुछ शमर्ा कर अन्दाि से ककतना होगा, नोट करके र्ाना।" रक्षाराम को अपनेघर िाने का ककराया और रास्ते ेमें भोिन-पानी के शर्ए पैसेटदये।

रक्षाराम को बोर्ा गया कक गुरु महारिा तुमको पिाँ सार् की पढ़ाई का खिा लदेना िाहते हैं। इसशएं तुम यह सात हिार रुपये अपने नाम से गावाँ के पास िो भी बकैं है, उसमें खाता खुर्वा कर र्ाना और तुम्हारी उम्र की विह से नहींहो सके तो माता व वपता िी के साथ ज्वाइंट एकाउंट (सांझां खाता) खुर्वा देना। रक्षाराम गावाँ गया। कुछ टदन बाद ज्वाइंट एकाउंट का खाता और इण्टर के दो सार् का खिालकरीब ७५ हिार रुपये का एक अनुमातनत टहसाब र्े कर आया। शाजन्त तनवास में संन्यासी सेवकों ने आपस में बात कर व ककसी प्रोफेसर से बात करके पिाँ सार् का उससे काफी अचधक अनुमातनत खिा लतैयार ककया। कफर उसे ेगुरु महारिा िी को टदया गया। गुरु महारिा िी ने उतनेही रुपये का बकैं ड्राफ्ट बनवाया और रक्षाराम का जिस बकैं में खाता है उस बकैं मैनेिर को अपनेर्ेटर पैि में एक चिट्ठी दी ताकक उसको भववटय में कोई परेशानी न हो। एक छोटे-से र्डके को एक साथ इतनेरुपये देनेका ववरोध करनेके स्थान पर गुरु महारिा ने रक्षाराम को सम्पूण लसहायता राशश दी। रक्षाराम भी खुशी-खुशी अपनेघर गया आगे ेकी पढ़ाई करने को।

"बादर् बबना मागेँ ही िर् वृजृटट करते ेहैं, ऐसे ही सन्त िन भी बबना मागेँ स्वयं दूसूरे के टहत में दूसूरों की सेवा में र्गेरहते ेहैं।"

- भतृहलररकृत नीततशतकम् ्

ॐ

मा ाँआनन्दमयी आश्रम ववंधं्यािर् के एक कायक्रलम में गुरु महारिा गये थे। ववंधं्यािर् आश्रम पहाड में जस्थत है। आश्रम के एक तरफ गुरु महारिा का तनवास था। कमरे के पीछे पहाड में दूरू एक रास्ता ऊपर गावाँ की ओर गया था। यह रास्ता काफी घुमावदार और िढ़ाई का है। एक टदन मध्याह्न के भोिन के बाद गुरु महारिा हाथ-मुहाँ धो रहे थे। तब णखडकी सेनिर पडी कक ठेर्ी में िने का पेड भर कर एक वृद्ध और एक छोटा-सा र्डका र्े िा रहे हैं। र्डके की उम्र करीब १० सार् की होगी और वृद्ध की उम्र साठ से ज्यादा होगी। ठेर्ी को पीछे से वृद्ध व्यजक्त धकेर् रहा है और र्डका आगे ेसे खींि रहा है। दोपहर का समय था, काफी धूप थी, पहाड की घुमावदार िढ़ाई में भरी हुई ठेर्ी र्ाने में बहुत कटठनाई हो रही थी। यह दृश्य देखते ेही सन्त हृदय िववत हो गया, तुरन्त ही एक स्वामी िी को फर्, बबस्कुट, पानी की बोतर् और कुछ रुपये र्ानेको कह कर खुद उस तरफ आगे ेबढ़े। यह सब एक छोटी-सी थैर्ी में रख कर, वह स्वामी िी गुरु महारिा के पीछे िर्े। परन्तु गुरु महारिा और वह वृद्ध व्यजक्त के बीि में दीवारनुमा ५ फीट का कटा हुआ पहाड िो खडा था, िैसे ेभी हो उन स्वामी िी के कहने पर गुरु महारिा िी उनकी पीठ पर िढ़ कर ऊपर उठ गये। वह स्वामी िी भी ककसी प्रकार ऊपर गये। उनके पास पहुाँि कर गुरु महारिा िी वृद्ध व्यजक्त के साथ पीछे से ठेर्ी को धकेर्नेर्गे और दूसूरे सेवेक स्वामी िी आगे ेसे खींिनेर्गे। कुछ दूरूी पर रास्ते ेके ककनारे पर एक पेड था। उस पेड के पास िब पहुाँि गये तब गुरु महारिा िी उनको बोर्े- "थोडी देर आराम कर र्ो।" ठेर्ी को ठीक सेजस्थर रखने ेके बाद सभी पेड की छाया में बैठे।

गुरु महारिा िी ने बहुत ही आत्मीयता से, बडे ही तयार से बातिीत करते ेहुए उनको फर् और बबस्कुट खाने ेको टदये। वृद्ध व्यजक्त तो प्रेम सेगद्गद हो गया। पीने के शर्ए पानी भी टदया। दोनों ही खा-पी कर पूण लरूप से तृतृत हो गये। बैग में काफी रुपये थे, गुरु महारिा ने उन सबको मोड कर एक छोटा-सा गोर्ाकार रोर् बनाया और वृद्ध व्यजक्त की कमर की धोती में मोड कर रख टदया। तब गुरु महारिा िी बोर्े- "गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी महारिा की तरफ से यह छोटी-सी भेंट स्वीकार करें। हम उनके दासानुदास हैं। ऋवषकेश, मुतनकीरेती में गंगा के ककनारे उनका आश्रम है। हम वहींआश्रम में रहते ेहैं।"

बाद में गुरु महारिा िी और वृद्ध व्यजक्त ने ठेर्ी को पीछे से धकेर्ा और उन सेवक स्वामी िी और उस र्डके ने आगे ेसे खींिकर पहाड की सब िढ़ाई पार कर दी। उनका गावाँ पास आ गया। अब उनको अपनेघर िाने में कोई टदक्कत नहींथी। िब गुरु महारिा आश्वस्त हुए कक वह आराम से िा सकते हैं, तब वृद्ध व्यजक्त को बोर्े- "आप अपना दैतनक कम लिो होता है, उसे ेकरते ेरहें और भगवान् ्का नाम र्ेतेरहें। हाथ में काम और मुख में भगवान् ्का नाम र्ेतेरहें।" गुरु महारिा िी उनको आशीवादल दे कर आये और वह भी आनजन्दत हो कर अपने घर को गये।

"पर उपकार विन मन काया।
सन्त सहि सुभाऊ खगराया।" - रामिररतमानस
ॐ

सद्गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी के िन्म स्थान पत्तमिै में उनकी िन्म शताब्दी के समय से शुरू हुआ 'स्वामी शशवानन्द सटेंनरी िेररटेबबर् हाजस्पटर्' है। स्वामी िी महारिा हर सार् वहााँकुछ टदन व्यतीत करते ेहैं। स्वामी िी महारिा वहााँरहते ेसमय सुबह और शाम की प्राथनला सभा में िाते ेहैं। प्राथनला सभा हाजस्पटर् के ओ. पी. िी. हॉर् में सद्गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी की प्रततमा के सम्मुख होती है। प्राथनला के बाद स्वामी िी महारिा का अल्प समय का प्रविन होता है। अन्त में स्वामी िी महारिा के हाथ से सभी को प्रसाद शमर्ता है।

िब ऐसेही एक बार स्वामी िी महारिा के रहते ेसमय, आणखर टदन सुबह की प्राथनला सभा में, प्राथनला पूरी हो गयी, स्वामी िी महारिा का प्रविन हो गया और सभी ने प्रसाद भी र्े शर्या। परन्तु स्वामी िी महारिा हाथ में प्रसाद शर्ये िारों ओर देख रहे हैं िैसे ेककसी को प्रसाद देनेके शर्ए ढूाँढ़ रहे हों।

तब ककसी ने कहा- "सबने प्रसाद र्े शर्या, और कोई रह तो नहींगया?"

स्वामी िी महारिा बोर्े– "एक ग्यारह बारह सार् की र्डकी हर टदन प्रसाद र्ेनेआया करती थी, िो नहींआयी? िो सफेद ड्रेस पहनेथी, जिसका ककनारा र्ार् रंग का था। नाक में र्ौंग (नाक फूर्) पहनेथी। िो आपके पीछे की पंजक्त में बैठैती थी। आप र्ोगों में से ककसी ने देखा है क्या ?"

वहााँउपजस्थत स्वामी शरवणभवानन्द िी और गुरु महारिा िी के सब सेवक 'नहींदेखा है' कह कर स्वीकृतत दी। उपजस्थत सब र्ोग एक-दूसूरे से पूछने र्गे, अन्दर-बाहर देखने र्गे, परन्तु ककसी ने नहींदेखा।

तब स्वामी िी महारिा बोर्े– "वह तो माता कन्याकुमारी ही थी। यह अस्पतार् गुरुदेव की पावन न्मिभूशम टदव्य तो है ही, उसमें माता कन्याकुमारी की िरणरि और आशीवादल से और भी धन्य हो गयी। इस भूशम को माता िी की कृपा शमर् गयी।"

सब र्ोग आश्यियिलककत हो गये। सिोने र्ायक बात है कक मातेश्री को मानव-शरीर धारण करके प्राथनला सभा में उपजस्थत होना और स्वामी िी महारिा के हाथ से प्रसाद प्राप्त करना बहुत सौभाग्य की बात है।

ॐ

स्वामी िी महारिा वहींपत्तमि तनवास के समय में, उडीसा के गंिामि जिर्े के एक मध्यम वग लके परिवार के माता, वपता और पुत्र का आगमन हुआ। उनका बेटा ब्र् कैंसर से ग्रशसत था। उसका इर्ाि करा रहे थे; परन्तु कोई ज्यादा सुधार नहीं हो रहा था। माता-वपता की ऐसी आपवत्त, दुःखद जस्थतत में केवर् गुरु महारिा ही सहारा एवंभरोसा थे, गुरु महारिा सेशमर् कर ककसी प्रकार अपनी व्यथा प्रकट करें, यही कोशशश कर रहे थे। परन्तु कभी सफर् नहींहो पा रहे थे। इसी बिी उनको ककसी ने सर्ाह दी कक गुरु महारिा अभी पत्तमि में हैं। तुम वहााँिा कर शमर्ो, कोशशश करके देख र्ो। तब वह बेटे को र्े कर पत्तमि में आ गये।

गुरु महारिा िी को उनकी तकर्ीफ के बारे में अवगत कराया गया। दूसूरे टदन गुरु महारिा अस्पतार् परिसर में शाम के समय भ्रमण करते गेट के पास पहुाँिे। साथ में अस्पतार् के स्वामी िी र्ोग, कायकलता,ल गुरु महारिा िी के सेवेक गण और भी अनेक र्ोग मौिूद थे। सबके पीछे वह माता, वपता और पुत्र थे। गुरु महारिा ने पीछे की ओर मुड कर उस बार्क को अपनेपास बुर्ाया। बार्क के शसर पर अपने दोनों हाथ रख कर कुछ शमनट तक मन्त्र-पाठ ककया, प्राथनला की िैसे कक करुणामय भगवान् बुद्ध। अन्त में बोर्े-"सद्गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी महारिा आपका कल्याण करें, आपको र्म्बी आयु दें।" कफर बार्क के वपतािी से बातिीत की। उन माता-वपता के प्रेमाश्रु बहनेर्गे, मानो कृतकृत्य हो गये हों। दूसूरे टदन वह परिवार पत्तमिसे अपने घर िर्ा गया, कुछ सार् बाद पता िर्ा कक वह बार्क अब पूण लस्वस्थ हो गया है और अपना दैतनक िीवन अच्छे से व्यतीत कर रहा है।

ॐ

स्वामी िी महारिा िब आश्रम में होते, तब सुबह और शाम के सत्संग में समाचध मजन्दर िाते थे। रात का सत्संग हो िानेके बाद स्वामी िी महारिा आश्रम में आये हुए अततचथ और भक्तों से शमर्ते थे। बहुत सार् पहर्े ऐसेही एक राबत्र सत्संगं के बाद स्वामी िी महारिा आये हुए भक्तों से शमर् रहे थे। स्वामी िी महारिा

स महात्मा सुदुर्भल: 26 अपनेआसन पर बैठै थे। ारों तरफ भक्त िन और आश्रमवासी थे। सामने-सामने सब र्ोग बैठे हुए थे ेऔर पीछे
की ओर सब खडे ेथे। स्वामी ी महारिा एक-एक कर र्ोगों से शमर् रहे थे। ंिानक पीछे से माता ी को स्वामी ीी महारिा ने पास बुर्ाया। वह माता ी सबसे पीछे थी। परन्तु उनके सामनिी माता ी थी, वह आनेर्गी। स्वामी ी बोर्े- "नहीं-नहीं, वह पीछे ो माता ी हैं।"

वेमाता ी बहुत ही खुश हो कर सामनेआयी और शायद अपनेबेटे को अपने पास बुर्ाया। देखने ेसे र्गता था कक माता ी ककसी गावाँ की होंगी, परन्तु वह भजक्तमती र्ग रही थी। थोडी ही िगह में माता ी ने स्वामी ी महारिा को बहुत ही भाव से प्रणाम ककया। स्वामी ी महारिा ने काफी समय तक माता ी के साथ बात की। उसी समय स्वामी ी महारिा ने पूछा कक झुमरीतर्ैया में सब कैसे ेहैं? ककसी-ककसी का नाम र्े कर भी पूछा। अन्त में स्वामी ी महारिा ने उनको कुछ प्रसाद टदया। तब उन माता ी को याद आया कक वह भी कुछ र्ायी थी स्वामी ी महारिा के शर्ए। आस-पास ढूाँढ़नेर्गी। तब ककसी ने पीछे से कििाँ का एक ार टदखा कर बोर्ा- "ये है क्या?" माता ी बोर्ी- "हााँ, वही है।" माता ी को िब स्वामी ी महारिा ने पास बुर्ाया तब वह इतनी खुश हो गयी कक गुर्ाब ामुन का ार पीछे रह गया, र्ाना ही भूर् गयी। उसमें माता ी खुद गुर्ाब ामुन बना कर र्ायी थी। स्वामी ी महारिा को दे कर बोर्ी- "आपके शर्ए घर से बना कर र्ायी हूाँ।"

स्वामी ी महारिा ने ार को अपनेहाथ में शर्या, गुरुदेव समाचध की तरफ ो र्ोग बैठै और खडे ेथे, उनको थोडा-सा हटने ेके शर्ए इशारा ककया। ार का ढक्कन खोर्ा, दोनों हाथों से ार को ऊपर उठा कर गुरुदेव को भोग र्गाया। तब एक िम्मि मगाँाया और मुहाँ ऊपर करके दो गुर्ाब ामुन एक के बाद एक ग्रहण ककये। स्वामी ी महारिा अपनी दवाई को छोड कर बाकी कोई भी खाने ेकी ििी अन्य समय पर नहींर्ेतेथे। ो र्ेना है, वह केवर् अपनेभोिन के समय र्ेतेथे। शायद िहााँश्रद्धा है, भजक्त आटद है, वहााँ ऐसा ही कुछ व्यततक्रम देखने ेको शमर्ता है। यह देख कर माता ी भाववववभोर हो कर रोनेर्गी।

दो गुर्ाब ामुन र्ेनेके बाद स्वामी ी महारिा बोर्े- "यह सबको बाटाँ दो।" एक स्वामी ी सबको एक-एक कर प्रसाद देनेर्गे। सेवक के मन में आया कक यहााँ इतने सारे र्ोग उपजस्थत हैं और ार में जितना गुर्ाब ामुन है वह तो सबको पूरा नहींहोगा। इसशर्ए यह दुर्भल प्रसाद आगे िर् कर र्े र्ेना ाटहए। सेवक धीरे से आगे ेबढ़ा और एक प्रसाद र्े शर्या। सबकी निर, सबका ध्यान स्वामी ी महारिा की तरफ था, परन्तु सेवक की निर प्रसाद पर थी। सबको प्रसाद देनेके बाद ार गुर्ाब ामुन बि गये। बिे ेहुए गुर्ाब ामुन के ार को स्वामी ी महारिा के सामने रख टदया गया। ार को देख कर स्वामी ी महारिा बोर्े- "गुरु तनवास र्े िर्ो।" बाकी भक्त र्ोगों को शमर्ने के बाद स्वामी ी महारिा गुरु तनवास िर्ेगये। सेवक ने, बाद में ो स्वामी ी बाटाँ रहे थेऔर भी ककसी-ककसी सेइस ववषय में बात की, परन्तु ककसी के ध्यान में यह बात नहींथी। ककसी ने इस बारे में ध्यान नहींटदया था। ककसी ने बोर्ा- "हााँहोगा।"

ाार में थोडा-सा गुर्ाब ामुन समाचध मजन्दर में उपजस्थत सबको शमर्ने के बाद भी बि गया, ैसे ेकक स्वामी ी महारिा खुद अनेक अवसर पर बोर्े हैं। बहुत वष लपहर्े ेस्वामी ी महारिा कुछ र्ोगों के साथ

स महात्मा सुदुरुभल: 27 नैनीतार् के पास कैंीि में बाबा नीमकरोरी् िी के दशनल के शर्ए गये थे। साथ में एक छोटी-सी टोकरी में कुछ

सन्तरे रे् कर गये थे। िब वहााँपहुाँिे तब बाबा अपनेकमरे में कुछ र्ोगों के साथ बैठे थे। स्वामी िी महारिा ने बाबा को प्रणाम करके टोकरी को बाबा के पास रखा। बाबा ने वहााँउपजस्थत सब र्ोगों को एक-एक सन्तरा टदया, कफर भी पिााँ-छह सन्तरे बि गये, िबकक जितने सन्तरे थे, र्ोग करीब उनसे ेदुगुने थे। कफर भी सन्तरे बि गये। बाबा नीमकरोरी् िी की बात स्वामी िी महारिा खुदु सबको बोर्ते ेथे, परन्तु स्वामी िी महारिा अपनी बात हमेशा छुपाते हैं।

ॐ

एक बार गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी महारिा के दो शशटय परस्पर असहमत होनेपर क्रोधावेश में कुछ अपशब्द कह बैठे। िब यह बात गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी को पता िर्ी तब वे बबना ककसी को बताये उस टदन तनराहार रह कर उन दोनों शशटयों के शर्ए भगवान् ्से क्षमा प्राथनला तथा सद्बुद्चध के शर्ए प्राथनला की। ठीक वैसा ही गुरु महारिा िी अपने शशटयों के शर्ए वैसी ही पररजस्थतत में उनको सन्मतत प्राप्त होनेके शर्ए प्राथनला तो करते ेही थेसाथ ही उनको बुर्ा कर स्वामी शशवानन्द िी कृत श्री राम की सवव्लयापकता के गीत को उनके साथ दोहराने को कहते ेथे।

ॐ श्री राम िय राम िय िय राम
ॐ श्री राम िय राम िय िय राम
पृथ्वी िर् अजग्न वायु आकाश में हैं राम
हृदय मन प्राण और इजन्र्यों में हैं राम
श्वास रक्त नाडी और मजस्तटक में हैं राम
शब्द भाव वविार और कम लहैं राम
ॐ श्री राम िय राम िय िय राम ।।

भीतर राम बाहर राम सामने हैंराम
ऊपर राम नीिे राम आगे−पीछे हैं राम
दाय ेंराम बाय ेंराम सवत्रल हैं राम
व्यापक राम ववभु राम पूण लहैं राम
श्री राम िय राम िय िय राम ।।

सत् ्हैं राम चित् ्हैं राम आनन्द हैं राम
शाजन्त हैं राम शजक्त हैं राम ज्योतत हैं राम
प्रेम हैं राम दया है राम सौन्दय लहैं राम
आनन्द है राम प्रसन्नता है राम

पववत्रता है राम श्री राम िय राम िय िय राम ।।

आश्रय हैं राम सान्त्वना राम गतत राम साक्षी है राम।

माता वपता शमत्र बन्धु गुरु हैं राम

मूर् आधार स्रोत आदश लकेन्द्क्ष्यि है राम

सृजृटटकता लपार्नकता लसंहारकतालमुजक्तदाता हैं राम

ॐ श्री राम िय राम िय िय राम ।।

परम क्ष्यि मानव का केवर् एक हैं राम

श्रद्धा प्रेम उपासना से वरेण्य हैं राम

समवपतल भाव भजक्त से शमर्ते हैं राम

ॐ श्री राम िय राम िय िय राम ।।

अिनल वन्दन प्राथनला कीतनल से प्रातय हैं राम

ॐ श्री राम िय राम िय िय राम

ॐ श्री राम िय राम िय िय राम ।।

शायद इसका अशभप्राय यह है कक िब िड हो या ितन, दृश्य हो या अदृश्य सब-कुछ राम ही है, भगवान् ्ही है, तो कफर ककससे ेद्वेष करें, ककस से क्रोध करें! ककसी से द्वेष करने अथवा क्रोध करनेका मतर्ब भगवान् ्से द्वेषे करना है। बस सबसे प्रेम ही ककया िा सकता है।

ॐ

एक बार स्वामी िी महारिा व्हीर् ियर में शाजन्त तनवास के िारों तरफ घूम रहे थे। साथ में हम सब संन्यासी सेवक और बब्रगेडियर सब्बरवार् िी थे। बात कुछ िैतन्य महाप्रभु की िर् रही थी। बब्रगेडियर सब्बरवार् िी ने पूछा- "स्वामी िी, िब िैतन्य महाप्रभु िगन्नाथपुरी में थे, वे पहर्े ेवृन्दावन नहींगये थे। पहर्े ेअपनेशशटयों को भिे कर श्री कृटण ने ककस िगह पर क्या-क्या र्ीर्ा की थी, उसी उसी िगह को पुनरुद्धार के
शर्ए प्रेररत ककया ! उनको कैसे ेपता िर्ा कक कौन-सी िगह पर श्री कृटण ने क्या र्ीर्ा की थी?"

स्वामी िी महारिा बोर्े- "देखो....। जिन्होंने भगवत्साक्षात्कार ककया है, वह िो िानने को िाहेंगे ेवह
िान सकते हैं। भर्े ही अतीत का क्यों न हो, िैसा कक आप टी.वी. देखते हैं, यहााँतक कक िैसा म ैंआपको देख रहा हूाँ सुना रहा हूाँ।"

तत्क्षण बब्रगेडियर सब्बरवार् ने पूछ शर्या - "स्वामी िी भी ऐसा देख सकते हैं?"

तब स्वामी िी महारिा बोर्ते–बोर्ते िुप हो गये। जितना भी समय बाहर घूमे, वह और कुछ भी नहीं बोरे्। कारण स्वामी िी महारिा ने अपनेआपको हमेशा छुपाया है, कभी प्रकट होनेनहीं टदया।

ॐ

और एक टदन ऐसी ही कुछ बात हुई। स्वामी िी महारिा छत के ऊपर बैठे थे। उस समय स्वामी िी महारिा श्रीरामकृटण परमहंस की बात कर रहे थे। परमहंस िैसे ेकोई सन्त नहींहुए जिन्होंने अर्ग-अर्ग मत से साधना कर भगवत् ्उपर्जब्ध की हो। जिस समय जिस मत को अपनाया, उस समय उसी में ही रम गये।

एक स्वामी िी ने पूछा- "रामकृटण परमहंस तो अभी शरीर में नहींहैं। उनको ब्रह्मर्ीन हुए अनेक वष ल बीत गये हैं। अगर कोई भगवत्साक्षात्कार ककया हुआ सन्त िाहे तो अतीत के उन पर्ों को क्या देख सकते ेहैं?"

तब स्वामी िी महारिा बोरे्- "हााँ.... हााँ.... तनश्िय ही देख सकते हैं।" कफर स्वामी िी महारिा दूसूरी बात करने र्गे।

ॐ

सन् ्२००७ टदसम्बर महीने में ररवर िेर् स्कूर् देहरादून के कुछ छात्र-छात्राए,ाँ वप्रंशंसपर् सुरीत आहर्ुवाशर्या माता िी के साथ स्वामी िी महारिा को शमर्ने के शर्ए शाजन्त तनवास आये थे। माता िी कुछ बच्िों के साथ टदसम्बर माह में स्वामी िी महारिा के दशनल के शर्ए हर सार् आती थीं। इस बार बच्िों ने

कक्रसमस के कैरोर् गाये। उनके साथ स्वामी िी महारिा ने भी कैरोर् गुनगुनाये। बच्िों ने शंकरािाय लकृत तनवाणलाटटकम्, ् भगवद्गीता के पंदिश अध्याय और हे प्रभु आनन्ददाता गा कर सुनाये। स्वामी िी महारिा बहुत प्रसन्न हुए। उसी समय बच्िों को बोरे्– "माता-वपता और शशक्षक का सम्मान करना, उनकी बात मानना, सबमें भगवान् ्वास करते ेहैं। माता-वपता और शशक्षक प्रत्यक्ष भगवान् ्हैं। सबके प्रतत दया, मैत्रीभाव रखना। ककसी से घृणा नहींकरनी िाटहए। ककसी के प्रतत क्रोध नहींकरना िाटहए। क्रोध अपना शत्रु है। वह अपना भी अतनटट करता है और दूसूरों का भी अतनटट करता है। सबमें भगवान् ्वास करते ेहैं, तो आप ककसी से क्रोध या घृणा करते ेहैं तो वह भगवान् ्के प्रतत क्रोध करने के समान है। असत्य कभी नहीं ंबोर्ना िाटहए। असत्य बोर्ना पाप है। समय सबसे मूल्यवान् ्है इसीशर्ए समय कभी व्यथ लनहींनिेंदेना िाटहए। समय का हमेशा सदुपुयोग करना िाटहए। जिस समय िो करना िाटहए, उसे ेपूरी र्गन सेकरना िाटहए। तब आप िीवन में सफर्ता प्रातत करेंगे। आप सब सत्यवादी बनें, सदािारी बनें, महापुरुषों की िीवनी का पाठ करें। मन िंिर् है, उसे ेहमेशा अच्छे कमों में र्गाये रखें।"

उन बच्र्ों में से दो मुसर्मान थे। उनसे ेस्वामी िी महारिा ने पूछा कक आप प्रत्येक शुक्रवार को वपता िी के साथ मसजिद में नमिा पढ़ने िाते ेहैं क्या ?

वह दोनों बोरे्- "हााँ, हम नमिा पढ़ने िाते ेहैं।" स्वामी िी महारिा बोरे्- "हर टदन नमिा पढ़नी िाटहए, शुक्रवार को तो अवश्य नमिा पढ़नी िाटहए।" बाद में कीतनल, शाजन्तपाठ कर सबको प्रसाद टदया।

ॐ

एक बार ठण्ढी के टदन में समाचध मजन्दर के राबत्र सत्संग के बाद स्वामी िी महारिा अपनी गाडी से गुरु तनवास आ रहे थे। गुरु तनवास के सामने कुछ दुकानें हैं। एक दुकान के बरामदे में एक आदमी एक ही कम्बर् ओढ़ कर सोया हुआ था। गाडी गुरु तनवास गेट के पास पहुाँितेही स्वामी िी महारिा ने उसको देख शर्या। तब बोरे् कक "इतनी ठण्ढ में एक ही कम्बर् ठण्ढ नहींसभाँारे्गा। उनको और एक अच्छा कम्बर् ओढ़ा दो। परन्तु सावधानी से जिससे ेउसकी नींद न टूटे। इसशर्ए धीरे से ओढ़ाना।" गुरु तनवास में पहुाँिने के बाद एक स्वामी िी ने एक मोटा-सा कम्बर् टदया, सेवक ने िा कर उसको धीरे से कम्बर् ओढ़ा टदया और नींद में व्याघात भी नहींहुआ। शायद गुरु महारिा िी का कहने का मतर्ब था कक सेवा करते ेसमय पूण लएकाग्रता से, श्रद्धा से और जिनकी सेवा कर रहे हैं, उनको ककसी भी प्रकार की तकर्ीफ न देते ेहुए करनी िाटहए। जिसकी सेवा की िाये, उसको पता भी न रे्
की सेवा ककसनेकी है।

ॐ

स्वामी िी महारिा का खानपान पहरे् ेसे ही बहुत कम है। बाद में धीरे-धीरे और कम होता गया। सन् २००६ से स्वामी िी महारिा का िो भोिन था वह करीब आधा चगर्ास मट्ठा (Butter milk) टदन में और रात को उतनेही दूध में हॉरशर्क्स शमर्ा कर रे्ते थे। कभी-कभी उसमें से भी छोड देते ेथे। पूरे २४ घण्टे में इतना ही रे्ते थे। शरीर बहुत कमिोर हो गया था। कभी-कभी तबीयत खराब हो िाती थी। उस समय में अगर पहरे् ेसे ककसी-ककसी को शमर्ने के शर्ए समय टदया है तो स्वामी िी महारिा उनको शमर्ना बन्द नहीं करते ेथे। शमर्ते समय स्वामी िी महारिा को अपने शरीर का, न ही समय का ध्यान रहता था। बाद में बहुत थक िाते ेथे। इतनेथक िाते ेथे ेकक अपना मट्ठा या हॉरशर्क्स का एक कप रे्ना भी बन्द कर देते ेथेऔर पूरा आराम करना िाहते थे।े इससे और भी कमिोर हो िाते ेथे। कभी-कभी स्वामी िी महारिा पहरे् ेसे बोर्ते ेथे ेकक म ैंउनसे ेइतनेसमय शमर्ूाँगा, समय हो िाये तो मुझे बता देना। ककन्तु जितने समय के शर्ए बोर्ते ेथे ेउससे कई गुना ज्यादा समय खुद रे्ते थे। कभी-कभी र्ोग सोिते ेथेकक स्वामी िी महारिा की आवाि बटढ़या है, तबीयत भी ठीक र्ग रही है; परन्तु ये र्ोग बोर्ते ेहैं कक स्वामी िी महारिा की तबीयत ठीक नहींहै। ककन्तु वास्तववकता कुछ दूसरी होती थी।

ॐ

सन् ्२००५ में रुचधयाना के िन्दनशसंहं िी अपने पररवार सटहत गुरु महारिा के दशनल के शर्ए शाजन्त तनवास आये थे। िन्दनशसंहं िी ने अपनी युवावस्था में गुरु महारिा िी से आचथकल सहायता पा कर पढ़ाई की थी और ऋवषकेश में दिी के काम का प्रशशक्षण शर्या था। रुचधयाना में अपना कामकिा ककया। अब बेटे की शादी के बाद गुरु महारिा िी के आशीवादल के शर्ए आये थे।

गुरु महारिा ने उनसे हार्िार् पूछा। उसी समय सबको बोर्े– "अपनेसे बडों को आदर-सम्मान देना और छोटों को तयार देना। तुम खाने ेसे पहर्े ेदुःखी, दररि, पशु, पक्षी, वृद्ध, बीमार आटद को अपनी शजक्त के अनुसार खाने ेके शर्ए देना। अन्न की तनन्दा नहींकरना, और अन्न कभी बरबाद नहीं करना। अन्न ब्रह्म है। जितना हो सके परोपकार करना। दूसूरों का भर्ा करना, 'परोपकाराय इदं शरीरम्' ् भाव से सेवा करनी िाटहए। तन:स्वाथ लभाव से सेवा करनी िाटहए। इसके फर्स्वरूप आप शुद्ध हो िायगें। आप िो करोगे ेउसे ेआप ही भोगोगे। सदा भगवत् ्नाम स्मरण करते ेरहना। अपनेदैतनक कम लमें िब फुसतल शमर्ेतो नाम िप करते ेरहना। भगवान् ्ने यह जिह्वा दी है कक मधुर बोर्ें, भगवत् ्नाम कीतनल करें। नाम िप करें परन्तु ककसी की तनन्दा न करें। अपनी वाणी द्वारा हो या कम लद्वारा ककसी को आघात न करें। आप िो देखते हैं, िो सुनते हैं, िो स्वाद ग्रहण करते ेहैं, सबमें वही परमात्मा को अनुभव करें। सबमें भगवान् ्का दशनल करें। इसका बारम्बार अभ्यास करें।" आणखर में स्वामी िी महारिा ने कीतनल ककया और सबको प्रसाद टदया।

ॐ

बब्रगेडियर िा. मेहता िी अनेक बार स्वामी िी महारिा के स्वास्थ्य परीक्षण के शर्ए शाजन्त तनवास आते ेथे। एक बार उन्होंनेपूछा- "स्वामी िी, मेरे शर्ए कोई उपदेश।" स्वामी िी महारिा बोर्े– "रोगी की सेवा ही भगवान् ्की सेवा है। भगवान् ्सबमें ववरािमान हैं। िब ककसी रोगी की देखभार् करते ेहैं, तब यह भाव रखें कक उसके अन्दर िो परमात्मा है, म ैंउनकी पूिा कर रहा हूाँ। तन:स्वाथ लसेवा ही सच्िी भगवत् ्आराधना है। अपना िो कतव्लय शमर्ा हुआ है, उसमें कभी अवहेर्ना न करें। िाक्टर के विन ऐसेहोनेिाटहए कक रोगी की आधी बीमारी ठीक हो िाये। िैसे ेहमारे शरीर को प्रततटदन कुछ खाद्य की आवश्यकता है ठीक वैसी ही आत्मा के शर्ए प्रततटदन स्वाध्याय की आवश्यकता है। प्रततटदन कुछ आध्याजत्मक ग्रन्थ पाठ करें। भगवद्गीता के कुछ श्र्ोक अथ लके साथ पाठ करें और उन पर चिन्तन-मनन करें। यह आपकी दैतनक साधना का अंग बन िाना िाटहए।"

ॐ

१८ नवम्बर सन् ्२००४ दोपहर को धूप में स्वामी िी महारिा टहर् रहे थे। उसी समय शशवानन्द सत्संग भवन, टदल्री से धमशलसंहं िी स्वामी िी महारिा के शर्ए कुछ सामान रे् कर आये। उनके साथ बातिीत करते े समय स्वामी िी महारिा बोरे्- "ओ िी, हर समय भगवान् ्को याद करना, हर पर् उन्हीं के नाम का िप करना। सद्गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी महारिा ने अपनी 'ववश्व-प्राथनला' में कहा है :

"हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दशनल करें।

तुम्हारी अिनला के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।

सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।

सदा तुम्हारी ही मटहमा का गान करें।

तुम्हारा ही कशर्कल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।

सदा हम तुममें ही तनवास करें।"

"पेड-पौधेऔर िींटी से रे् कर इनसान तक सबके अन्दर वही एक परमात्मा को अनुभव करो। सबमें भगवान् ्के दशनल करो। सबको भगवत् ्स्वरूप मान कर प्रणाम करो। सब िीवों की सेवा करो। वह भगवान् ्कहीं ं दूरू नहीं ंहै, वह हमेशा हर ककसी के पास ही है। हमारे अन्दर है हमारे बाहर है। सब िगह है। हर पर् उसको अनुभव करो। बारम्बार अभ्यास करो। िो भी काम शमर्ा है उसेभगवान् ्की सेवा, भगवान् ्की पूिा मान कर करो। इस कशर्युग में भगवत् ्नाम की मटहमा अपार है। इसशर्ए हर समय भगवान् ्के नाम का िप करते ेरहना िाटहए। हर काम से पहरे्, े काम के बीि में और काम के अन्त में भगवत् ्नाम स्मरण अवश्य करें। जितना अचधक नाम िप होगा, उतना ही अचधक आप शुद्ध और पववत्र होंगे। काम करते ेरहें, नाम िपतेरहें।" ऐसी ही अनेक बातें उनको बतायीं।

ॐ

सन् ्२००५ फरवरी में दो नवयुवक भाई, शसद्धाथ लकौर् और सागर कौर् स्वामी िी महारिा के दशनल करने के शर्ए शाजन्त तनवास आये थे। वह दोनों मूर् रूप से आनन्द आश्रम, कन्हनगढ़ से िुडे थे। उनके मन में कुछ शंका थी। दोनों भाइयों ने सन् ्१९९१ में आनन्द आश्रम में पापा रामदास िी के ऑडियो कैसेट के िररए मन्त्र-दीक्षा री् थी। कुछ सार् बाद आनन्द आश्रम के एक स्वामी िी ने उनको बताया कक तुम्हारा गुरु पापा रामदास नहींहै। तुम्हारा गुरु तो स्वामी राम हैं (स्वामी राम एक महाराटट्र के सन्त हैं), क्योंकक वह तुम्हारे कुर्गुरु हैं। स्वामी राम उनके घर को आतेिाते ेरहते ेथे। इसीशर्ए वेउर्झन में थेकक सही मायने में हमारा गुरु कौन है।

स्वामी िी महारिा बोरे्- "हर एक पररवार का एक-एक कुर्गुरु होता है। बबना कुर्गुरु के पररवार में सोर्ह संस्कारों में सेकोई भी संस्कार नहींहोता है। गभ लसंस्ंकार से रे् कर अजग्नदाह संस्कार तक सारे संस्ंकारों में कुर्गुरु की आवश्यकता है। परन्तु सद्गुरु उनसे ेअर्ग है। जिससे ेमन्त्र-दीक्षा रे् कर व्यजक्त िीवन्मुजक्त की ओर अग्रसर होता है, आत्म-साक्षात्कार करता है, वह सद्गुरु है। आप दोनों के फोटो रख कर पूिा कर सकते हैं, परन्तु सद्गुरु पापा रामदास ही हैं।"

उन्होंनेपूछा- "पापा रामदास के इटटदेव श्री कृटण थे, हमारे इटटदेव कौन हैं?"

स्वामी िी महारिा बोरे्- "हााँ, पापा रामदास िी पहरे् ेश्री कृटण का ध्यान करते ेथे। श्री कृटण ने वंशी बिातेहुए, नृतृय करते ेहुए उनको दशनल टदये, परन्तु पापा रामदास िी ने ववनम्र भाव से, हाथ िोड कर प्राथनला की- हे परब्रह्म, म ैंआपका केवर् इसी रूप में दशनल करना नहीं िाहता हूाँ। म ैंआपका सब िगह दशनल करना िाहता हूाँ। सवं ंब्रह्ममयम्। ्"

उन भाइयों में से एक ने कहा- "मनैंएक स्वतन देखा जिसमें आपनेमेरे कान में इटट-मन्त्र 'श्री राम िय राम िय िय राम' तीन बार उच्िारण ककया। मनैं पूछा- म ैंआपके िैसा िीवन्मुक्त बनना िाहता हूाँ। म ैं िीवन्मुक्त बनूाँगा कक नहीं? आपनेस्वतन में ही उत्तर टदया- म ैंजिस धारा में प्रवाटहत हो रहा हूाँ, तुम भी उस धारा में प्रवाटहत होगे।" कफर उन्होंने स्वामी िी महारिा से पूछा- "क्या आप हमको मन्त्र-दीक्षा देंगे? े"

स्वामी िी महारिा बोरे्- "नहीं-नहीं! आप मन्त्र-दीक्षा रे् िुके हैं। उसी मन्त्र का िप करो। म ैंआपको आध्याजत्मक उपदेश दे सकता हूाँ। आपका मागदलशनल कर सकता हूाँ, गुरु में श्रद्धा और ववश्वास होना िाटहए। श्रद्धा और ववश्वास के साथ अपना इटटमन्त्र िप करना िाटहए।"

उन्होंनेपूछा- "स्वामी िी, हम दोनों अभी कॉर्िे में पढ़ रहे ह।ैं आि का कार्िे का पररवेश हो या समाि का पररवेश बहुत कर्ुवषत है। हम इस कर्ुवषत पररवेश में अपने-आपको कैसे ेबिा कर रख पायगें ेऔर शीघ्र ही भगवत् ्उपर्जब्ध कैसे ेकर पायगें? े कृपा करके उसका उपाय हमें बताइए?"

स्वामी िी महारिा बोरे्- "हर समय भगवत् ्स्मरण करो, समय व्यथ लन िाने दो, अपना हर कम लउनकी पूिा बन िाये ऐसा हो, अपने सारे कम,ल कमफलर् सब भगवत् ्िरणों में समवपतल कर दो। िेब में अपने इटटदेव की, गुरुदेव की एक फोटो रखो। हर आधा घण्टे में हो या िब फुरसत शमरे् ेतब िेब से तनकार् कर देखो। तब भगवत् ् याद बनी रहेगी। अपनेर्क्ष्य को सदा याद रखो, कक्षा के दो पीररयि के बीि में िो समय शमर्ा उस समय में भी िप करो या शर्णखत िप करो। शर्णखत िप के शर्ए एक कापी सदा अपने पास रखो। िब समय शमरे् ेतो मन्त्र शर्ख सको। रे्ककन पढ़ाई के समय शत-प्रततशत अपना मन पढ़ाई में और दूसूरे समय शत-प्रततशत भगवान् ्में ध्यान होना िाटहए। मन ही बन्धन-मोक्ष का कारण है। मन को एकाग्र करके परमात्मा में पूणरूलपेण र्गाना िाटहए।

स महात्मा सुदुरुभलः 34 अनावश्यक बात न करो। सबके अन्दर परमात्मा के ही दशनल करो। तब आपसेकोई गर्ती नहींहोगी। और
आपका कल्याण होगा।"

उन्होंनेकहा - "स्वामी िी, हमें आशीवादल दीजिए। हम पर कृपा करें।"

स्वामी िी महारिा बोरे्-"परमात्मा परब्रह्म, पापा रामदास िी, माता कृटणाबाई िी, स्वामी रामतीथ,ल रमण महवष लिी, श्री श्री माँआनन्दमयी िी, गुरुदेव स्वामी शशवानन्द िी और भारतवष लके सभी महान् ्सन्त-महात्मा आप दोनों पर कृपा अनुग्रह करें!"

उन्होंनेकहा- "िैसेपापा रामदास िी ने आपके शशर पर दोनों हाथ रख कर आशीवादल टदया था, हमको भी वैसेही आशीवादल दीजिए।"

स्वामी िी महारिा ने उनके शशर पर हाथ रख कर आशीवादल टदये। उन्होंनेकहा- "हम इसी िन्म में िैसे े शीघ्र भगवत् ्उपर्जब्ध करेंगे, ऐसी आप हम पर कृपा करें।" यह बात उन्होंनेबार-बार दोहराई।

स्वामी िी महारिा बोरे्- "हााँ, इसी िन्म में भगवत् ्उपर्जब्ध करोगे।"

इतनी कम उम्र में कैसी व्याकुर्ता है! धन्य हैं उनके माता-वपता और धन्य हैं वे दोनों भाई।

स्वामी िी महारिा उनसे ेऐसेबात करते−करते ेबोरे्− "मबैंपछर्ेिन्म में ही भगवत् ्उपर्जब्ध कर र्ी थी; परन्तु कुछ कम लबाकी रह गये थे, इसशर्ए कफर आना पडा।"

स्वामी िी महारिा पूविलन्म सेही िीवन्मुक्त होनेके बाद भी इस िन्म में, इतनी उम्र में, अनेक तकर्ीफें सह कर हम सबके कल्याण के शर्ए िीवन धारण ककये हुए हैं। "परोपकाराय इदं शरीरम्।्"

एक बार िाक्टर मोहन िी को ककसी प्रसंग में स्वामी िी महारिा बोरे् थेकक इस शरीर द्वारा िो होना था, वह सब पूरा हो गया है। अब इस शरीर का कोई प्रयोिन नहींहै।

ह्नू िांिन्मन मर्न्ज्ञ नर् न्म ांप्रपद्यि।
र् सुदेर्ः सर्मवमति स मह त्म सुदुलुभवः ।। (र्गी : ७-१९)

अनेक िन्मों के उपरान्त ज्ञानी मेरी शरण में आता है, ककन्तु 'वासुदेव ही सवस्लव है' ऐसा ज्ञान प्राप्त करने वार्ा महात्मा अत्यन्त दुरुभल है।

वववववध प्रसंगों में बहुत सी बातें हुई, परन्तु सारी बातें तो सेवक को याद नहींहै। िो थोडा-बहुत याद था, उसको भाषाबद्ध ककया है। सेवेक ने अपनी अल्पमतत सिैसा देखा, िैसा समझा, उसी भाव को रूप देनेका यह

एक प्रयास मात्र है। आशा करता हूँ, इसमें ि◌ो भी त्रुटुटया ◌ँहैं, उनके शर्ए सन्त, महात्मा, ज्ञानी, गुणी पाठक वृनूद, मूढ़ सेवक को कृपा करके क्षमा करेंगे।

हरर ॐ ि◌त्स्् ◌्! सद्गुरुदेर् पणवमस्ु!